

# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (I)

PART II—Section 3—Sub-section (I)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 635]

नई दिल्ली, शुक्रवार, नवम्बर 6, 2009/कार्तिक 15, 1931

No. 635]

NEW DELHI, FRIDAY, NOVEMBER 6, 2009/KARTIKA 15, 1931

महानिदेशक (रक्षोपाय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 5 नवम्बर, 2009

विषय : अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर के आयातों से संबंधित रक्षोपाय जांच—अंतिम जांच परिणाम।

सा.का.नि. 799(अ).—सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 एवं उसके तहत बनाए गए सीमा-शुल्क टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क की पहचान और आकलन) नियम, 1997 को ध्यान में रखते हुए।

क. प्रक्रिया :

इंडियन पेपर मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन, पीएचडी हाऊस (चौथी मंजिल), 4/2 सिरी इंस्टीटयूशनल एरिया (एशियाई खेल गांव के सामने) द्वारा (1) आईटीसी लि.-पेपर बोर्ड्स एंड स्पेशियलिटी पेपर्स डिविजन, 106, सरदार पटेल रोड, सिकंदराबाद-500003, आंध्र प्रदेश, (2) बल्लारपुर इंडस्ट्रीज लि., फस्ट इंडिया प्लेस, टावर-सी, महरोली गुडगांवा रोड, गुडगांवा (हरियाणा)-122001, (3) जे.के. पेपर लिमिटेड, नेहरू हाऊस, 4 बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002, (4) मै. दि आंध्रा पेपर्स मिल्स लि., 501-509, स्वप्न लोक कॉम्प्लेक्स, 92/93 सरोजनी देवी रोड, सिकंदराबाद-500003, (5) मै. तमिलनाडु न्यूज प्रिंट एंड पेपर्स लि., 67, माउंट रोड, गुडंडी, चेन्नई-600032, (6) अभिषेक इंडस्ट्री लि., (7) सेंचुरी पल्प एंड पेपर, (8) इमामी पेपर मिल्स लि., (9) हिंदुस्तान पेपर कार्पो. लि., (10) खन्ना पेपर मिल्स लि., (11) दि मैसूर पेपर मिल्स लि., (12) ओरिएंट पेपर एंड इंडस्ट्री लि., (13) पदमजी पल्प एंड पेपर मिल्स लि., (14) रामा न्यूज प्रिंट एंड पेपर्स लि., (15) शेषसायी पेपर एंड पेपर बोर्ड लि., (16) दि सिरपुर पेपर मिल्स लि., (17) स्टार पेपर मिल्स लि., (18) दि वेस्ट कोस्ट पेपर मिल्स लि. और (19) यश पेपर मिल्स लि. की ओर से सीमा-शुल्क टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क की पहचान और आकलन) नियम, 1997 के नियम 5 के अंतर्गत मेरे समक्ष एक आवेदन प्रस्तुत किया गया था, जिसमें प्राथमिक रूप से विशुद्ध रसायन लुग्दी से निर्मित अन-कोटेड पेपर और कॉपी पेपर के भारत में बढ़े हुए आयातों पर रक्षोपाय शुल्क लगाने का अनुरोध किया गया था ताकि घरेलू अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर उत्पादकों का गंभीर क्षति या गंभीर क्षति के निरंतर खतरे से बचाव किया जा सके। इस बात से संतुष्ट होते हुए कि नियम 5 की अपेक्षाएं पूरी हो गई हैं, दिनांक 20 अप्रैल, 2009 को भारत में अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर (जिन्हें एतद्पश्चात् "उक्त उत्पाद" कहा गया है) के आयातों से संबंधित रक्षोपाय जांच की शुरुआत की सूचना जारी की गई थी और उसी दिन उसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया था।

2. इस सूचना की एक प्रति सभी निर्यातक राष्ट्रों की सरकारों को नई दिल्ली स्थित उनके दूतावासों के माध्यम से भेजी गई थी। जांच शुरुआत संबंधी सूचना की एक-एक प्रति नीचे सूचीबद्ध सभी ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को भी भेजी गई थी।

**घरेलू उत्पादक एसोसिएशन**

- I. इंडियन पेपर मैन्यूफैक्चरर्स एसो.  
पीएचडी हाउस, (4<sup>थ</sup> तल),  
4/2 सिरी इंस्टीट्यूशनल एरिया,  
(एशियन गेम्स विलेज के सामने),  
नई दिल्ली-110 016

**घरेलू उत्पादक**

- I. बल्लापुर इंडस्ट्रीज लिमिटेड  
फर्स्ट इंडिया प्लेस, टावर सी,  
महरोली गुडगांवा रोड,  
गुडगांव (हरियाणा) - 122001
- II. जेके पेपर लिमिटेड  
नेहरू हाउस, 4 बहादुरशाह जफर मार्ग,  
नई दिल्ली-110 002
- III. आई टी सी लिमिटेड  
106, सरदार पटेल रोड,  
सिकंदराबाद- 500003,  
आंध्र प्रदेश
- IV. मै. दि आंध्रा पेपर मिल्स लि.  
501-509, कॉम्प्लेक्स,  
92/93, सरोजनी देवी रोड,  
सिकंदराबाद-500 003
- V. मै. तमिलनाडु न्यूजपिंट एंड पेपर्स लिमिटेड  
67, माउंट रोड,  
गुड्डुडी,  
चेन्नई-600 032
- VI. अभिषेक इंडस्ट्रीज लि.,  
ई 212, किटचुलू नगर,  
लुधियाना- 141 001,  
पंजाब
- VII. सेंचूरी पल्प एंड पेपर,  
सेंचूरी पल्प एंड पेपर

- घनश्यामधाम, पो.ऑ. लालकुआ- 262-402, IVX  
जिला. नैनीताल, उत्तरांचल
- VIII. इमामी पेपर मिल्स लि.,  
इमामी पेपर मिल्स लि.  
687 अनंदपुर ई.एम. बाईपास,  
कोलबाता-700 107. IVX
- IX. हिंदुस्तान पेपर कार्पोरेशन लि.  
75-सी, पार्क स्ट्रीट,  
कोलकाता- 700 016. IVX
- X. खन्ना पेपर मिल्स लि.,  
फतेहगढ़ रोड,  
अमृतसर-143 001. IVX
- XI. दि मैसूर पेपर मिल्स लिमिटेड  
16/4 अली आस्कर रोड,  
पो.बा.नं. 112,  
बंगलौर- 560 052. IVX
- XII. ओरिएंट पेपर इंडस्ट्री लि.,  
बिरला बिल्डिंग  
9/1, आर.एन. मुखर्जी रोड,  
कोलकाता- 700 001. IVX
- XIII. पदमजी पल्प एंड पेपर मिल्स लि.,  
जटिया चैम्बर्स,  
60, डॉ. वी.बी. गांधी मार्ग,  
मुंबई- 400 023. IVX
- XIV. रामा न्यूजप्रिंट एंड पेपर्स लि.,  
31, चोवरिंगजी रोड,  
कोलकाता- 700 016. IVX
- XV. शेहसूरी पेपर एंड पेपर बोर्ड लि.  
काउवेरी आर एस पी ओ  
ईरोड- 638 007.  
तमिलनाडु

XVI. दि. सिरपुर पेपर मिल्स लि.,  
यू सी ओ बैंक बिल्डिंग (तीसरा तल)  
पार्लियामेंट स्ट्रीट,  
नई दिल्ली- 110 001.

XVII. स्टार पेपर मिल्स लि.,  
सेठ बलदेवदास बरोरिया रोड,  
सहारनपुर,  
उत्तर प्रदेश- 247 001.

XVIII. दि वेस्ट कोस्ट पेपर मिल्स लि.  
31, चौरंगी रोड,  
कोलकाता- 700 016.

XIX. यश पेपर मिल्स लि.  
पो.ओ. दर्शन नगर,  
जिला फैजाबाद - 224 135  
उत्तर प्रदेश

#### आयातक तथा प्रयोक्ता

- I. चिमनलाल फीन पेपर प्रा.लि.:  
40/42, बॉम्बे म्यूचुअल बिल्डिंग  
293, डॉ. डी.एन.रोड, मुंबई
- II. इनफिनिटी इंडस्ट्रीज प्रा.लि.:  
हारुन हाउस, पहली मंजिल  
294, परीन नरीमन स्ट्रीट,  
आरबीआई के सामने  
मुंबई
- III. पेपर प्लस टेक्नोलॉजीज (प्रा.)लि.:  
एसएन. 592/2/11, हंडेवाली रोड,  
भोसावा फार्म, देवाची उमाली,  
पुणे
- IV. अक्षय इम्पैक्स:  
7, नाइनिथमा नाइकेन स्ट्रीट,  
दूसरी मंजिल,  
चेन्नई- 600003, तमिलनाडु

- V अमित इम्पेक्स: नया नं. 17,  
पुराना नं.9, नरायणा मुंडाली लेन,  
चेन्नई- 600079
- VI पेपर्स वर्ल्ड वाइड (इंडिया) सर्विसेज प्रा.लि.:  
18, सैदुल्ला स्ट्रीट, फ्लैट ए,  
प्रभु अपार्टमेंट,  
टी. नगर, चेन्नई,  
तमिलनाडु - 600017
- VII अजन्ता ऑफसेट एंड पैकेजिंग लि.:  
प्लॉट नं. 61, सेक्टर 27- सी,  
फरीदाबाद,  
हरियाणा- 121003
- VIII एवरो एक्सपोर्ट्स:  
प्लॉट नं. 183, सेक्टर IV,  
मानेसर, गुडगांव, हरियाणा,  
एफ-80, ,खानपुर एक्सटेंशन,  
दिल्ली
- IX रेप्रो इंडिया लि.:  
ए-50/2, टीटीसी इंडस्ट्रियल एरिया,  
एमआईडीसी महापा,  
न्यू बॉम्बे- 400709
- X प्रिंटहाउस (इंडिया) प्रा.लि.  
6, दत्ता मंदिर रोड,  
भानदूष (पश्चिमी), मुंबई

#### निर्यातक और विदेशी उत्पादक

- I. अप्रैल फाइन पेपर ट्रेडिंग,  
जालान तेलुक बेदुग नं. 31,  
जकार्ता,  
इंडोनेशिया
- II. एडवांस एग्रो,  
187/3 मू 1, बंगा-ट्रेड केएम.42 रोड,  
बंगुआ डिस्ट्रिक्ट,

अम्पूर बंगपाकोंग,  
चाचोएंगसाओ, 24180  
थाइलैंड

- III. स्टोरा-एन्सो ओवाईजे पी.ओ. बॉक्स 309,  
एफआई-00101 हेलसिंकी,  
फिनलैंड
- IV. सिनार मास ग्रुप -एपीपी चाइना  
सिनार मास पेपर (चाइना) इनवेस्टमेंट कंपनी लि.  
8-9एफ, बंद सेंटर, नं. 222,  
ईस्ट यानन रोड,  
शंघाई, 2000002
- V. गोल्ड ईस्ट ट्रेडिंग (हांगकांग) कं.लि.,  
यूनिट 501-504ए,  
एम्पायर सेंटर  
68 मोदी रोड, टी सिमसासुई ईस्ट  
हांगकांग
- VI. कोवा कंपनी लि.,  
6-29 निशिकी 3- चोम नाका-कू नगोया,  
जापान
- VII. वाइटल सोल्यूशन पीटीई लि.,  
सिंगापुर 069532
- VIII. दाई पेपर (एस.ए.) पीटीई लि.,  
3. शेनटोन वे, # 11-08,  
शेनटोन हाउस  
सिंगापुर
- IX. सेलमार्क एशिया पीटीई लि.,  
47 स्कॉट्स रोड  
# 12-01 गोल्डबैल टावर्स,  
सिंगापुर
- X. इंटरनेशनल पेपर,  
6400 पोपलर एवेन्यू,  
मैमफिश 38197,  
यूएसए.

XI. वेस्ट वाको,  
11013 वेस्ट ब्रोड स्ट्रीट,  
ग्लेन एलिन,  
वर्जिना 23060,  
यूएसए.

XII. एम-रियल कार्पोरेशन,  
पी ओ. बॉक्स 20,  
मेट्टसा 02020,  
फिनलैंड

3. उसी दिन सभी ज्ञात घरेलू उत्पादकों और आयातकों और निर्यातकों को प्रश्नावलियां भी भेजी गई थीं, जिसमें उनसे 30 दिनों के भीतर उत्तर देने के लिए कहा गया था।

4. हितबद्ध पक्षकारों के विचारार्थ और समयावधि बढ़ाने के सभी अनुरोधों पर विचार किया गया था और जांच की शीघ्रता को ध्यान में रखते हुए इन अनुरोधों को स्वीकार किया गया था।

5. आवेदक ने अनंतिम रक्षोपाय शुल्क हेतु अनुरोध किया था और अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर के मामले में नाजुक परिस्थितियों के साक्ष्य उपलब्ध कराए थे और इस प्रकार इन उत्पादों के मामले में प्रारंभिक जांच परिणामों पर विचार किया गया था। अधिसूचना सं. 35/97-एनटी-सी.शु. दिनांक 29.7.1997 द्वारा जारी सी.शु. टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क की पहचान और आकलन) नियम, 1997 के नियम 9 जिसमें यह निर्धारित है कि महानिदेशक, जांच चलाने की कार्यवाही शीघ्रता से करेंगे और नाजुक परिस्थितियों में वह गंभीर क्षति या गंभीर क्षति के खतरे के संबंध में प्रारंभिक जांच परिणाम रिकॉर्ड कर सकते हैं, के अनुसार, तत्काल रक्षोपाय लगाने की जरूरत की जांच की गई थी। उपर्युक्त के आधार पर 24 अप्रैल, 2009 को प्रारंभिक जांच परिणाम जारी किए गए थे, जिनमें भारत में आयातित अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर पर मूल्यानुसार 20% की दर से रक्षोपाय शुल्क लगाने की सिफारिश की गई थी। तथापि, कोई अनंतिम रक्षोपाय शुल्क नहीं लगाया गया था।

6. दिनांक 15 सितंबर, 2009 को एक सार्वजनिक सुनवाई हुई थी, जिसके लिए 17 अगस्त, 2009 को सूचना भेजी गई थी। इस सार्वजनिक सुनवाई में भाग लेने वाले सभी हितबद्ध पक्षकारों से सीमाशुल्क टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क की पहचान और आकलन) नियम, 1997 के नियम 6 के उप-नियम (6) के अनुसार मौखिक रूप से उनके द्वारा प्रस्तुत विचारों को लिखित रूप में प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया था। एक हितबद्ध पक्षकार द्वारा प्रस्तुत लिखित अनुरोधों की प्रति सभी अन्य हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कराई गई थी। हितबद्ध पक्षकारों को अन्य हितबद्ध पक्षकारों के लिखित अनुरोधों के संबंध में प्रत्युत्तर यदि कोई हों, प्रस्तुत करने का भी अवसर प्रदान किया गया था। लिखित अनुरोध या प्रत्युत्तर के रूप में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा व्यक्त किए गए सभी विचारों की जांच की गई और समुचित निर्धारण करने के लिए उन्हें ध्यान में रखा गया है।

7. घरेलू उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत सूचना का आवश्यक समझी गई सीमा तक घरेलू उत्पादकों के संयंत्रों के मौके पर दौरे द्वारा सत्यापन किया गया था। सत्यापन रिपोर्ट का अगोपनीय संस्करण सार्वजनिक फाइल में रखा गया है।

### घरेलू उद्योग के विचार

8. यह आवेदन इंडियन पेपर मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन, द्वारा (1) आईटीसी लि. (2) बल्लारपुर इंडस्ट्रीज लि. (3) जे.के. पेपर लिमिटेड, (4) मै. दि आंध्रा पेपर्स मिल्स लि. (5) मै. तमिलनाडु न्यूज प्रिंट एंड पेपर्स लि. (6) अभिषेक इंडस्ट्री लि., (7) सेंचूरी पल्प एंड पेपर, (8) इमामी पेपर मिल्स लि., (9) हिंदुस्तान पेपर कार्पो. लि., (10) खन्ना पेपर मिल्स लि., (11) दि मैसूर पेपर मिल्स लि., (12) ओरिएंट पेपर एंड इंडस्ट्री लि., (13) पदमजी पल्प एंड पेपर मिल्स लि., (14) रामा न्यूज प्रिंट एंड पेपर्स लि., (15) शेषसायी पेपर एंड पेपर बोर्ड लि., (16) दि सिरपुर पेपर मिल्स लि., (17) स्टार पेपर मिल्स लि., (18) दि वेस्ट कोस्ट पेपर मिल्स लि. और (19) यश पेपर मिल्स लि. की ओर से दायर किया गया था जिसमें भारत में विशुद्ध रासायनिक लुग्दी से प्राथमिकता निर्मित अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर के आयातों पर; बढ़े हुए आयातों द्वारा हुए गंभीर क्षति के खतरे के विरुद्ध रक्षोपाय शुल्क लगाने का अनुरोध किया गया था। आवेदकों ने निम्नलिखित प्रमुख मुद्दे उठाए हैं।

9. आवेदकों ने यह आरोप लगाया है कि भारत में अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर के बढ़े हुए आयातों की प्रवृत्ति से घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति का खतरा उत्पन्न हो गया है।

10. घरेलू उद्योग प्राथमिक रूप से विशुद्ध रासायनिक लुग्दी से निर्मित अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर का विनिर्माण करते हैं, जो अध्याय शीर्ष 4802 के विभिन्न शीर्षों के अंतर्गत आते हैं। घरेलू उद्योग ने यह अनुरोध किया है कि उनके उत्पाद एचएसएन तथा सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम 1975 के 4802 54 90, 4802 55 10, 4802 55 20, 4802 55 30, 4802 5540, 4802 55 50, 4802 55 90, 4802 5610, 4802 5620, 4802 5630, 4802 5640, 4802 56 50, 4802 5690, 4802 57 10, 4802 57 20, 4802 57 30, 4802 5740, 4802 57 50, 4802 5790, 4802 58 10, 4802 58 20, 4802 58 30, 4802 58 40, तथा 4802 58 90 के अंतर्गत आने वाले आयातित उत्पादों से सीधे प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। आवेदकों ने भारत में 8 अंकीय स्तर के अंतर्गत उपर्युक्त शीर्षों के तहत आने वाले विशुद्ध रासायनिक लुग्दी से प्राथमिक रूप से निर्मित अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर के बढ़े हुए आयातों द्वारा घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति का खतरा उत्पन्न होने का आरोप लगाया है।

11. इन कागजों को रासायनिक अथवा यांत्रिक प्रक्रिया अथवा इन दोनों के संयोजन द्वारा प्राप्त लुग्दी के प्रयोग से बनाया जाता है। इसके अलावा, लुग्दी को नए संयंत्र स्रोतों अथवा पुनः चक्रित कागज से प्राप्त किया जा सकता है। वर्तमान आवेदन में प्राथमिक रूप से रासायनिक प्रक्रिया का प्रयोग करके विशुद्ध लुग्दी से बने अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर शामिल हैं। घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि 8 अंकीय स्तर पर ऊपर उल्लिखित शीर्षों के अंतर्गत आने वाले उत्पाद उनकी तकनीकी विशेषताओं, रासायनिक संयोजन और अन्य आधारभूत विशेषताओं की दृष्टि से समान हैं। इन सभी शीर्षों के उत्पादों का प्रयोग एक समान होता है। अतः ये उत्पाद समान उत्पाद हैं और प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धी उत्पाद हैं। गुणवत्ता की दृष्टि से छिटपुट ऊपरी अंतरों की संभावना के बावजूद इन उत्पादों में समान आधारभूत भौतिक विशेषताएं और समान अंतिम प्रयोग हैं। इन उत्पादों को समान



अथवा मिलती-जुलती बिक्री श्रृंखला के माध्यम से बेचा जाता है। ये उत्पाद मुख्यतः कीमत की दृष्टि से प्रतिस्पर्धा करते हैं। केवल एक 8 अंकीय स्तर वाले शीर्ष पर रक्षोपाय शुल्क लगाने से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा क्योंकि आयातक अन्य प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धी उत्पादों का आयात करना शुरू कर देंगे। इस प्रकार घरेलू उद्योग ने रक्षोपाय जांच के प्रयोजनार्थ उपर्युक्त की दृष्टि से पूरे उत्पाद समूह, जिसमें ऊपर उल्लिखित उत्पाद शामिल हैं, को "विचाराधीन उत्पाद" मानने का तर्क दिया है।

12. उन्होंने यह आरोप लगाया है कि आयातों में अचानक वृद्धि कम कीमतों पर हुई है, जिससे उन्हें अपना बाजार हिस्सा गंवाना पड़ा है।

13. कम कीमतों पर बढ़े हुए आयात अप्रत्याशित घटनाक्रम है। निर्यातक देशों में मांग में गिरावट के चलते उन देशों के विनिर्माता निर्यातों पर अत्यधिक छूट देकर अपनी अधिशेष माल सूची से छुटकारा पाने के लिए बाध्य हैं जिससे आयातों में अचानक वृद्धि हो गई है। प्रमुख प्रतिस्पर्द्धियों के पास अपनी अलग-अलग उत्पाद क्षमताओं की तुलना में काफी कम घरेलू मांग है। सुदूर पूर्व के कागज उत्पादकों ने अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर की विशाल क्षमता सृजित कर ली है। इस क्षमता में से प्रमुख हिस्सा विकसित देशों के लिए नियत किया गया था। विकसित देशों में मांग में अचानक गिरावट के कारण विकसित देशों के आयातकों ने इन देशों से कागज खरीदना बंद कर दिया है, जिसके परिणामस्वरूप निर्यातक देशों की कंपनियों के पास माल का काफी स्टॉक पड़ा हुआ है। इसके परिणामस्वरूप इन इकाइयों के पास अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर के स्टॉक का ढेर लगा हुआ है, जिसे वे भारत में कम कीमतों पर निर्यात करने का प्रयास कर रहे हैं और जिसमें अब भी काफी तीव्र गति से वृद्धि हो रही है। इन उत्पादों को भारतीय बाजार में कार्यशील पूंजी प्राप्त करने के लिए भेजा जा रहा है जिससे घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति का खतरा उत्पन्न हो गया है।

14. घरेलू उद्योग की लाभप्रदता और लगाई गई पूंजी पर आय में गिरावट आई है। आयातों की पहुंच कीमत और घरेलू बिक्री कीमत में जांच अवधि के दौरान अंतर बढ़ा है और जिससे गंभीर क्षति का खतरा उत्पन्न हो गया है।

15. उन्होंने बढ़े हुए आयातों द्वारा उत्पन्न गंभीर क्षति के वर्तमान खतरे के मद्देनजर गंभीर क्षति के विरुद्ध अनकोटेड पेपर और कापी पेपर के घरेलू उत्पादकों के संरक्षण के लिए रक्षोपाय शुल्क लगाने का अनुरोध किया है।

16. उन्होंने यह आरोप लगाया है कि अप्रत्याशित घटनाक्रम के कारण आयातों में बढ़ोत्तरी हुई है और यह कि इस वृद्धि के चलते गंभीर क्षति का खतरा उत्पन्न हो गया है। ऐसा कोई अन्य कारक नहीं है, जिसे घरेलू उत्पादकों के सामने आए गंभीर क्षति के इस खतरे के लिए उत्तरदायी ठहराया जा सके।

17. आवेदकों ने अनुरोध किया है कि अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर पर रक्षोपाय शुल्क लगाने से जनता को कोई नुकसान नहीं होगा क्योंकि घरेलू अनकोटेड पेपर और कापी पेपर की कीमतें भारत में कमोवेश स्थिर हैं। इसके अलावा आवेदकों ने अनुरोध किया है कि उनके कर्मचारियों को प्रत्यक्ष रोजगार के अलावा कागज उद्योग किसानों को उनकी आजीविका कमाने में मदद करता है और यह मृदा संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है। अतः कागज उद्योग की सुरक्षा के लिए रक्षोपाय शुल्क लगाना वास्तव में जनहित में होगा।

18. वर्ष 2006-07 में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा 99.4% था, जो 2007-08 के दौरान घटकर 99.1% रह गया। वर्ष 2008-09 के पहले 9 महीनों में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा उसी स्तर पर स्थिर था। जनवरी-मार्च, 2009 में यह आगे और घटकर 98.7% हो गया है जबकि आयातों में समग्र रूप से और सापेक्षिक रूप से वृद्धि हुई है। तथापि, इन मंदों की आयात कीमतों में तेजी से गिरावट आई है, जिससे आयातों में वृद्धि होने का खतरा और गंभीर क्षति होने का परिणामी खतरा उत्पन्न हो गया है।

19. 9 महीने की हाल की अवधि में आवेदकों के पास पड़ी बेची नहीं गई माल सूची में असामान्य वृद्धि हुई है। माल सूची में दिनांक 30.6.2008 को 66808 मी.टन की तुलना में 31.12.2008 की स्थिति के अनुसार 104750 मी.ट. तक की वृद्धि हुई है।

20. क्षमता उपयोग में अप्रैल-दिसंबर, 2008 में 104% से अप्रैल-जून, 2009 में 90% तक की गिरावट आई है।

21. आयातों में वृद्धि के कारण कीमतों पर दबाव और बिक्री में घरेलू उद्योग के हिस्से तथा उनकी लाभप्रदता में गिरावट की दृष्टि से क्षतिकारी प्रभाव पड़ा है। इस प्रकार, आयातों में अचानक वृद्धि और घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति के बीच कारणात्मक संबंध सिद्ध होता है।

22. विभिन्न देशों में अभूतपूर्व असमान मंदी के कारण भारत, जिसमें अन्य देशों की तुलना में बेहतर वृद्धि हुई है, में आयातों में अचानक बढ़ोत्तरी हुई है। विकसित देशों में निर्यातकों की अधिशेष क्षमताएं हैं जबकि विकसित देशों में अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर की मांग में गिरावट आई है। मांग में वृद्धि भारत में सर्वाधिक हुई है। इसके कारण अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर को भारतीय बाजार में सस्ती कीमतों पर भेजा जा रहा है जिससे गंभीर क्षति का खतरा उत्पन्न हो गया है।

23. घरेलू उद्योग की वर्तमान क्षमताएं, जिनका इस समय 90% तक उपयोग किया जा रहा है, वर्तमान घरेलू मांग को पूरा करने में सक्षम है। इसके अलावा, उत्पाद की मांग में भावी वृद्धि को पूरा करने के लिए क्षमता में विस्तार की भी योजना बनाई गई है। घरेलू उद्योग बेहतर विनिर्माण प्रथाओं, इन हाउस विद्युत उत्पादन में वृद्धि, प्रशासनिक खर्चों में कमी और मालसूची के कारगर प्रतिबंधन के लिए वचनबद्ध है।

#### निर्यातक राष्ट्रों की सरकारों के विचार

24. आयात पिछले कुछ वर्षों में भारत में बाजार हिस्से के .1% के स्तर तक भी नहीं पहुंचे हैं। इस प्रकार घरेलू उद्योग के पास अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर का लगभग पूरा बाजार है।

25. डब्ल्यू टी ओ रक्षोपाय करार के अर्थों के भीतर आयातों में कोई वृद्धि नहीं हुई है। आयातों में ऐसी कोई वृद्धि नहीं हुई है, जो हाल में हुई हो, अचानक हुई हो, तेजी से हुई हो और भारी मात्रा में हुई हो।

26. क्षति संबंधी किया गया विश्लेषण पूर्णतः असंतोषजनक है। संगत क्षति संबंधी संकेतकों जैसे बिक्रियों, उत्पादन, उत्पादकता, क्षमता उपयोग, लाभ और रोजगार में वृद्धि दर्शाने वाले आंकड़ों को विश्लेषण में शामिल नहीं किया गया है। बाजार हिस्सा स्थिर बना हुआ है और काफी अधिक (लगभग 99%) है। उत्पादन और बिक्रियों में वृद्धि हुई है, क्षमता उपयोग काफी अधिक है और यहां तक कि अप्रैल से दिसंबर, 2008 के दौरान यह 104% तक पहुंच गया था। तथापि, लाभ का स्तर अस्पष्ट है। इस प्रकार इस निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा जा सकता है कि घरेलू उद्योग की स्थिति खराब हुई है।

27. कोई कारणात्मक संबंध साबित नहीं हुआ है। यदि घरेलू उद्योग को कोई क्षति उठानी भी पड़ी है तो वह आयातों के अलावा किसी अन्य कारक के कारण हुई होगी।

28. डब्ल्यू टी ओ रक्षोपाय करार के अनुच्छेद 6 के अनुसार प्रारंभिक निर्धारण के अनुपालन में नाजुक परिस्थितियों में अनंतिम उपाय किए जा सकते हैं, यदि इस बात का स्पष्ट साक्ष्य हो कि आयातों में वृद्धि के कारण गंभीर क्षति हो सकती है या उसके होने का खतरा है। इस मामले में क्षति और कारणात्मक संबंध के बारे में कोई स्पष्ट साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया गया है।

29. भारती घरेलू उत्पादक अप्रैल, 2007 से मार्च, 2008 की अवधि में 1806161 मी.ट. की अपनी घरेलू बिक्रियों को बढ़ाकर अप्रैल, 2008 से मार्च, 2009 तक की अवधि में 1974623 करने में सफल रहे हैं। इसका अर्थ यह है कि घरेलू बिक्रियों में 9% की वृद्धि हुई है। घरेलू उत्पादन भी 1810292 मी.ट. से बढ़कर 1999633 मी.ट. हो गया है अर्थात् इसी अवधि के दौरान लगभग 10% की वृद्धि हुई है।

### निर्यातकों के विचार

30. जांच अवधि के दौरान आयातों में ऐसी कोई वृद्धि नहीं हुई है जिसे आयातों में "अचानक वृद्धि" के रूप में माना जा सके। मासिक आयातों में बाजार में 82 मी.ट. की मामूली वृद्धि हुई है जो आवेदकों द्वारा स्वयं प्रस्तुत किए गए अनुमानों के अनुसार लगभग 125000 मी.ट. प्रति माह की मात्रा बनती है। इस वृद्धि का भारतीय मांग में 0.06% का मामूली हिस्सा बनता है और यह रक्षोपाय कार्रवाई का आधार नहीं बन सकती है जो केवल अप्रत्याशित और नाजुक परिस्थितियों के समाधान के लिए होती है।

31. आवेदकों द्वारा आर्थिक संकट और मंदी निर्यातक देशों में उत्पादन क्षमताओं का अप्रयुक्त रहना और भारतीय बाजार में इन देशों द्वारा कम कीमतों पर बड़ी हुई मात्रा में इन उत्पादों के निर्यात का सहारा लेना जैसे निराधार वक्तव्य अप्रत्याशित घटनाक्रम के समर्थन में दिए गए हैं। ये विवरण निराधार कल्पना और अनुमानों के अलावा और कुछ नहीं है। उपर्युक्त विवरण के समर्थन में कोई आंकड़े, सूचना या विश्लेषण प्रस्तुत नहीं किया गया है।

32. बिक्री और बाजार हिस्से में कोई गिरावट नहीं आई है। घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा 2007-08 में 99.07% से बढ़कर 99.10% हो गया है और जनवरी-मार्च, 2009 में इसमें 0.20% की मामूली गिरावट आई है। बाजार हिस्से में 0.20% की नगण्य वृद्धि के कारण लगाए गए गंभीर क्षति के आरोप का कोई आधार नहीं है।

33. आयात कीमतों में कोई गिरावट नहीं आई है। वस्तुतः जांच अवधि के दौरान अनकोटेड पेपर की कीमतों में वर्ष 2007-08 की तुलना में वृद्धि हुई है। वर्ष 2007-08 में कीमतें 35822 रूपए प्रति मी.ट. थीं जबकि अक्टूबर, 08, नवंबर, 08 और दिसंबर, 08, जनवरी, 09 में यह क्रमशः 38055 रु. प्रति मी.ट., 38653 रु. प्रति मी.ट., 38843 रु. प्रति मी.ट., और 39270 रु. प्रति मी.ट. रही थीं। घरेलू उद्योग ने गैर-तुलना योग्य अवधि के गुमराह करने वाले आंकड़े दिए हैं जिन्हें किसी गहन विश्लेषण के बिना महानिदेशक द्वारा स्वीकार कर लिया गया है।

34. घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में कोई गिरावट नहीं आई है। घरेलू उद्योग के 3 संघटक अर्थात् बीआईएलटी, जेके पेपर्स और आई टी सी लि. के तिमाही परिणाम यह दर्शाते हैं कि लाभप्रदता में गिरावट संबंधी दावे गलत और गुमराह करने वाले हैं। यदि 31 दिसंबर, 2007 को समाप्त हुए 9 महीनों के परिणामों की 31 दिसंबर, 2008 को समाप्त हुए 9 महीनों के परिणामों के साथ तुलना की जाए तो इन तीनों इकाइयों के लाभों में क्रमशः 2.63%, 16.55% और 8% की वृद्धि हुई है।

35. घरेलू उद्योग की क्षमता या क्षमता उपयोग का कोई विश्लेषण नहीं हुआ है। वस्तुतः घरेलू उद्योग देश में बढ़ती हुई मांग को पूरा करने में सक्षम नहीं है जिसके परिणामस्वरूप आयातों के बाजार हिस्से में मामूली वृद्धि हुई है।

36. वर्ष 2007-08 से 2008-09 में आयातों में हुई कुल वृद्धि पूरे वर्ष के लिए 2753 के मामूली स्तर पर रही है जिसकी मात्रा 229 मी.ट. प्रति माह बनती है। यदि इसकी तुलना 2008-09 की अवधि के लिए कुल घरेलू खपत के साथ की जाए तो यह 0.11% के अत्यंत न्यून स्तर पर रही है। यह मात्रा समग्र तथा सापेक्षित दोनों दृष्टि से निश्चित रूप से नगण्य है।

37. यह अवश्य नोट किया जाना चाहिए कि वर्ष 2008-09 की अवधि के दौरान कुल आयात लगभग 19000 मी.ट. थे जो 2007-08 के दौरान हुए आयातों से केवल 2000 मी.ट. अधिक है। तथापि, यह नोट किया जाना चाहिए कि घरेलू उद्योग के अनुसार नहीं बेची गई माल सूचक जून, 2008 और दिसंबर, 2008 के बीच 66808 से 104750 मी.ट. के बीच रही थी। यह स्पष्ट है कि आयातों में हुई नगण्य वृद्धि बढ़ी हुई मालसूचियों का कारण नहीं रही है। घरेलू उद्योग के स्टॉक में माल इकट्ठा होने के कारण आयातों में अचानक वृद्धि नहीं थी बल्कि यह किसी नहीं बताई गई अंतर्निहित समस्या के कारण हुआ था और इसके लिए आयातों में कथित वृद्धि को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है।

38. घरेलू उद्योग ने पुनर्संरचना योजना के संबंध में विनिर्माण और प्रबंधन प्रक्रियाओं में सुधारों के बारे में काफी आम टिप्पणियां की हैं। इन्हें रक्षोपाय संबंधी करार और भारतीय कानूनों की कड़ी अपेक्षाओं के अंतर्गत अनुमानों की किसी भी कल्पना द्वारा कोई व्यवहार्य पुनर्गठन योजना नहीं माना जा सकता है।

#### अंतिम प्रकोटों और अनुमानों के विचार

39. अन्वेषण में विद्यमान उत्पाद की कोई उचित परिभाषा नहीं दी गई थी। दिया गया विवरण सन्तुल्य है और इसमें अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर के बीच कोई अंतर नहीं बताया गया है। अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर दो अलग-अलग उत्पाद समूह हैं। प्रत्येक के अलग-अलग अंतिम

प्रयोग हैं। कॉपी पेपर का प्रयोग आमतौर पर कॉपी करने और मुद्रण कार्यों के लिए कार्यालयों में प्रयोग तक सीमित है जबकि अनकोटेड पेपर-जो आकार में काफी बड़ा होता है-का प्रयोग आम तौर पर औद्योगिक मुद्रण प्रयोजनों (उदाहरणार्थ पुस्तकों, डायरियो आदि) के लिए किया जाता है।

40. आयातों में धारा 8 ख की अपेक्षा के अनुसार कोई भारी वृद्धि नहीं हुई है। उत्पाद की कुल मांग में आयातों के हिस्से में वस्तुतः 2007-08 में 0.93% से 2008-09 (अप्रैल-दिसंबर) में 0.90% की गिरावट आई है। इसके अलावा, सभी देशों से हुए आयातों का संयुक्त बाजार हिस्सा कुल मिलाकर 1% से कम है। यहां तक कि आवेदकों के अनुमानों के अनुसार आयातों का बाजार हिस्सा 1.11% बताया गया है। रिकॉर्ड में उपलब्ध आंकड़ों के एक वस्तुनिष्ठ विश्लेषण से इस निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा जा सकता है कि आयातों में वृद्धि द्वारा कोई गंभीर क्षति हो सकती है या उसके होने का खतरा है।

41. घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्री संबंधी आंकड़ों में पिछले तीन वर्षों से निरंतर सुधार हुआ है। उत्पादन में वर्ष 2006-07 में 1744500 मी.ट. से 2008-09 में 1999633 मी.ट. तक की वृद्धि हुई है (15% की वृद्धि) और बिक्रियों में 2006-07 में 1744914 मी.ट. से 2008-09 में 1974623 मी.ट. की वृद्धि हुई है जो 13% की वृद्धि दर्शाता है। अतः घरेलू उद्योग को कोई गंभीर क्षति नहीं हुई है।

42. सार्वजनिक वैबसाइट में उपलब्ध वित्तीय आंकड़े घरेलू उद्योग के वित्तीय क्षति संबंधी दावों को गलत ठहराते हैं। 3 जुलाई, 2009 को ब्लूमबर्ग की प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, बल्लारपुर इंडस्ट्रीज लि. ने विदेशी अधिग्रहणों में लगभग 1 बिलियन डॉलर निवेश करने की योजना बनाई है और 5 वर्षों में वह देश में स्थित संयंत्रों की क्षमता में 4 गुना विस्तार करने की योजना बना रहा है। इसके अलावा, बल्लारपुर के शेयरों में 31 मार्च, के स्टॉक बंदी के बाद व्यापार शुरू होने पर 18% की वृद्धि हुई है। इसी अवधि के दौरान, बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज के बैचमार्क में 16.3% की गिरावट आई है। बीआईएलटी ने 2006 और 2007 के बीच अपनी लगाई गई पूंजी पर आय में 8.1% से 8.3% का सुधार किया है। वस्तुतः बल्लारपुर के 5 वर्षों की औसत लाभप्रदता का अनुपात उद्योग में मौजूद अन्य प्रतिस्पर्धियों की तुलना में काफी अधिक रही है। इसी प्रकार जे.के. पेपर लि. ने जून, 2009 में समाप्त तिमाही में अपने निवल लाभ को दुगुना किया है, जो 20.2 करोड़ हो गया है जबकि वर्ष 2008-09 की चौथी तिमाही में आईटीसी लि. की कागज के व्यापार से होने वाली आय में 26% की वृद्धि हुई है।

43. याचिकाकर्ता के वर्ष 2008-09 के स्वयं के अनुमानों समेत याचिका में प्रदत्त आंकड़ों के अनुसार याचिकाकर्ताओं के कुल घरेलू उत्पादन में 2006-07 और 2007-08 के बीच 8% तक की वृद्धि हुई है और 2008-09 और 2007-08 के बीच इसमें 18.8% की और वृद्धि हुई है। यदि 2006-07 के आंकड़ों से इनकी तुलना की जाए तो वर्ष 2008-09 के दौरान कुल घरेलू उत्पादन में 28% से अधिक की वृद्धि हुई है।

44. याचिकाकर्ता ने गंभीर क्षति के खतरे के अपने दावे का आधार मुख्यतः "हाल के वैश्विक वित्तीय संकट" को बनाया है। इस तथ्य के होते हुए भी कि याचिकाकर्ता ने अपने दावे को सही साबित करने के लिए कोई साक्ष्य नहीं दिया है (उदाहरणार्थ चीन और इंडोनेशिया आदि में माल के विशाल स्टॉक), सभी संकेतक यह दर्शाते हैं कि वैश्विक मंदी या तो समाप्त हो गई है या समाप्त होने ही वाली है।

45. घरेलू उद्योग पिछले तीन वर्षों में उत्पादन स्तर के प्रतिशत के रूप में बिक्रियों को लगभग 100% के स्तर पर बनाए रखने में सक्षम रहा है अतः इस अवधि के दौरान याचिकाकर्ता के बाजार हिस्से में कमी बढ़े हुए आयातों के परिणामस्वरूप नहीं हो सकती है बजाए इसके इसका एकमात्र कारण घरेलू मांग में हुई वृद्धि को पूरा करने में घरेलू उद्योग की अक्षमता हो सकता है ।

46. यद्यपि याचिकाकर्ता ने भारत में अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर की आयात कीमतों में हाल की गिरावट की ओर ध्यान दिलाया है, तथापि याचिका उन कारणों को बताने में अक्षम रही है कि इन आयात कीमतों में गिरावट क्यों आई । सत्य यह है कि संबद्ध उत्पाद की आयात कीमतों में गिरावट कच्ची सामग्री निविष्टियों की कीमतों में गिरावट के प्रत्यक्ष प्रमाणस्वरूप हुई है । अमरीका में सॉफ्ट वुड लुग्दी और हार्डवुड लुग्दी कीमतों में जनवरी, 2008 में क्रमशः 800 अम.डॉ. और 750 अम.डॉ. से मई, 2009 में क्रमशः 500 अम.डॉ. और 410 अम.डॉ. तक की गिरावट आई है । इससे क्रमशः 37.5% और 45.3% की प्रतिशत गिरावट प्रदर्शित होती है ।

47. संबद्ध उत्पाद पर रक्षोपाय शुल्क लगाया जाना जनहित के विरुद्ध है क्योंकि इससे भारतीय पुस्तक प्रकाशन उद्योग की उत्पादन लागत में आगे और वृद्धि हो जाएगी, जिसके चलते आउटसोर्सिंग और विदेशी प्रतिस्पर्धा का सामना करने वाले उक्त उद्योग का अस्तित्व संकट में आ जाएगा । पुस्तकों के उत्पादन के लिए कागज प्रमुख कच्ची सामग्री है (पुस्तकों की लागत का 50% से अधिक) । यदि पुस्तकों पर रक्षोपाय शुल्क लगाया जाता है तो इसके परिणामस्वरूप भारत में पुस्तकों पर कर लगेगा, जो कि जनहित के विरुद्ध है ।

48. इसके अलावा, मुद्रण उद्योग भारत में लाखों कामगारों को रोजगार सुलभ कराता है । रक्षोपाय शुल्क लगाए जाने के परिणामस्वरूप कागज की कीमतों में किसी भी वृद्धि से इसकी कीमतों में पर्याप्त वृद्धि हो जाएगी जिससे पुस्तकों की कीमतों में वृद्धि होगी और परिणामस्वरूप भारत सरकार का साक्षरता अभियान प्रभावित होगा ।

49. याचिकाकर्ता के स्वयं के आवेदन में दिए गए आंकड़े यह दर्शाते हैं कि वर्ष 2006-07 से सभी देशों के लिए आयात कीमतें काफी अधिक रही हैं वस्तुतः वित्त वर्ष 2006-07 की तुलना में अप्रैल-दिसंबर, 2008 में आयात कीमतें 25.6% अधिक रही थीं (याचिकाकर्ता के आवेदन का पृष्ठ 7 देखें) ।

50. गंभीर क्षति और आयातों में वृद्धि के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है । आयात वास्तव में नगण्य रहे हैं । गंभीर क्षति, यदि कोई हो, अनेक अन्य कारकों के परिणामस्वरूप हुई है जिसका संबद्ध वस्तु के नगण्य आयातों से कोई लेना-देना नहीं है । ये अन्य कारक गुणवत्ता, डिलीवरी के मुद्दों, गैर-संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन करने वाली इकाइयों में हुए विदेशी और घरेलू घाटे, घरेलू बाजार में कच्ची सामग्री की कमी, बिजली की उच्च लागत और विदेशी अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर विनिर्माताओं की तुलना में अपशिष्ट कागज की कम रिकवरी दर से संबंधित है ।

51. याचिकाकर्ता का "पुनर्गठन योजना" संबंधी दावा हास्यास्पद है । इस उक्त दावे में क्षमता को बढ़ाने और अपनी कच्ची सामग्री, बिजली और अन्य लागतों में कटौती करने की उसकी योजना संबंधी एक जैसे विवरणों के अलावा और कुछ नहीं है ।

**महानिदेशक के निष्कर्ष**

52. मैंने मामले के रिकॉर्डों और घरेलू उत्पादकों, प्रयोक्ताओं/आयातकों, निर्यातकों और निर्यातक देशों की सरकारों द्वारा प्रस्तुत उत्तरों की सावधानीपूर्वक जांच की है। विभिन्न पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध और उनसे उत्पन्न मुद्दों पर नीचे दिए गए निष्कर्षों में उचित स्थानों पर विचार किया गया है।

53. **विचाराधीन उत्पाद :** आवेदकों ने यह आरोप लगाया है कि भारत में अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर के बढ़े हुए आयातों से घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति का खतरा उत्पन्न हो गया है। घरेलू उद्योग प्राथमिक रूप से विशुद्ध रासायनिक लुग्दी से निर्मित अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर का विनिर्माण करते हैं, जो अध्याय शीर्ष 4802 के विभिन्न शीर्षों के अंतर्गत आते हैं। घरेलू उद्योग ने यह अनुरोध किया है कि उनके उत्पाद एचएसएन तथा सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम] 1975 के 4802 54 90, 4802 55 10, 4802 55 20, 4802 55 30, 4802 55 40, 4802 55 50, 4802 55 90, 4802 56 10, 4802 56 20, 4802 56 30, 4802 56 40, 4802 56 50, 4802 56 90, 4802 57 10, 4802 57 20, 4802 57 30, 4802 57 40, 4802 57 50, 4802 57 90, 4802 58 10, 4802 58 20, 4802 58 30, 4802 58 40, तथा 4802 58 90 के अंतर्गत आने वाले आयातित उत्पादों से सीधे प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। आवेदकों ने भारत में 8 अंकीय स्तर के अंतर्गत उपर्युक्त शीर्षों के तहत आने वाले विशुद्ध रासायनिक लुग्दी से प्राथमिक रूप से निर्मित अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर के बढ़े हुए आयातों द्वारा घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति का खतरा उत्पन्न होने का आरोप लगाया है।

54. इन कागजों को रासायनिक अथवा यांत्रिक प्रक्रिया अथवा इन दोनों के संयोजन द्वारा प्राप्त लुग्दी के प्रयोग से बनाया जाता है। इसके अलावा, लुग्दी को नए संयंत्र स्रोतों अथवा पुनः चक्रित कागज से प्राप्त किया जा सकता है। वर्तमान आवेदन में प्राथमिक रूप से रासायनिक प्रक्रिया का प्रयोग करके विशुद्ध लुग्दी से बने अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर शामिल हैं। विचाराधीन उत्पाद में ऐसे अनेक उत्पाद समूह शामिल हैं, जो आयातित अथवा भारत में उत्पादित किए जाते हैं। गुणवत्ता और तकनीकी विनिर्देशन की दृष्टि से कुछ सूक्ष्म अंतर हो सकते हैं परंतु इन उत्पादों में समान तकनीकी विशेषताएं, रासायनिक संयोजन और अन्य मूलभूत विशेषताएं हैं। इनकी बिक्री समान या मिलती-जुलती बिक्री श्रृंखला से की जा सकती है। ये उत्पाद मुख्यतः कीमत की दृष्टि से प्रतिस्पर्धा करते हैं। ये आयातित उत्पाद घरेलू रूप से उत्पादित उत्पाद के लिए प्रतिस्थापनीय हैं अतः आयातित उत्पाद "समान या प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धी" वस्तुएं हैं।

55. यह आवेदन इंडियन पेपर मैनुफैक्चरर्स एसोसिएशन (आईपीएमए), द्वारा (1) आईटीसी लि. (2) बल्लारपुर इंडस्ट्रीज लि. (3) जे.के. पेपर लिमिटेड, (4) मै. दि आंध्रा पेपर्स मिल्स लि. (5) मै. तमिलनाडु न्यूज प्रिंट एंड पेपर्स लि. (6) अभिषेक इंडस्ट्री लि., (7) सेंचूरी पल्प एंड पेपर, (8) इमामी पेपर मिल्स लि., (9) हिंदुस्तान पेपर कार्पो. लि., (10) खन्ना पेपर मिल्स लि., (11) दि मैसूर पेपर मिल्स लि., (12) ओरिएंट पेपर एंड इंडस्ट्री लि., (13) पदमजी पल्प एंड पेपर मिल्स लि., (14) रामा न्यूज प्रिंट एंड पेपर्स लि., (15) शेषसायी पेपर एंड पेपर बोर्ड लि., (16) दि सिरपुर पेपर मिल्स लि., (17) स्टार पेपर मिल्स लि., (18) दि वेस्ट कोस्ट पेपर मिल्स लि. और (19) यश पेपर मिल्स लि. की ओर से दायर किया गया है जिसमें आयातों पर रक्षोपाय शुल्क लगाने का अनुरोध किया गया है। आईपीएमए के सदस्यों का भारत में कुल उत्पादन में 80% से अधिक हिस्सा बनता है और उन्होंने



अपनी सूचना को आईपीएमए के जरिए बताया है। तदनुसार आईपीएमए के सदस्य सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 8ख की उपधारा (6) के खंड(ख) के अनुसार, घरेलू उद्योग हैं।

56. **जांच अवधि :** घरेलू उद्योग में वर्ष 2008-09 (दिसंबर तक) की सूचना उपलब्ध कराई है और पिछले वर्षों अर्थात् 2007-08 तथा 2006-07 की सूचना के साथ 2008-09 (दिसंबर तक) की तुलना के आधार पर गंभीर क्षति के खतरे का दावा किया है। प्रारंभिक जांच परिणाम जांच अवधि के रूप में 2008-09 (दिसंबर तक) पर आधारित थे। घरेलू उद्योग ने इस आधार पर इसके बाद की अवधि के लिए न तो विश्वास किया है और न ही कोई आंकड़े प्रस्तुत किए हैं कि जांच अवधि को बढ़ाया नहीं जाना चाहिए क्योंकि यह प्राकृतिक न्याय के मानकों के खिलाफ होगा। उन्होंने यह भी तर्क दिया है कि इसके बाद की सूचना पर विचार करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उस सूचना पर रक्षोपाय जांच की शुरुआत का प्रभाव पड़ने की संभावना है।

57. इस मुद्दे की जांच की गई है। सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975, सीमाशुल्क टैरिफ (रक्षोपाय शुल्क की पहचान और आकलन) नियम, 1997, रक्षोपाय संबंधी करार या गैट के संगत अनुच्छेद-XIX में इस बात को विशिष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया गया है कि जांच अवधि कितनी होनी चाहिए। तथापि, जांच अवधि के मुद्दे पर अर्जेन्टीना फुटवियर संबंधी पैनल की रिपोर्ट तथा अर्जेन्टीना फुटवियर संबंधी अपीलीय निकाय की रिपोर्ट में विस्तार से चर्चा की गई है जिसे निम्नानुसार प्रस्तुत किया जा रहा है :-

**"अर्जेन्टीना-फुटवियर के आयातों पर रक्षोपाय : पैनल की रिपोर्ट"**

8.216 जहां तक जांच में घरेलू उद्योग की स्थिति में परिवर्तन के विश्लेषण में एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक की गई तुलनाओं पर लगभग पूर्ण भरोसा किए जाने का संबंध है, हमारी भी वही चिंता है जैसी कि "संवर्धित आयातों" के विश्लेषण के बारे में ऊपर नोट किया गया है। यहां हम इस बात को खास तौर पर नोट करते हैं कि यदि मध्यवर्ती रुझानों पर क्रमबद्ध ढंग से विचार नहीं किया जाता है और उनका विश्लेषण नहीं किया जाता है तो सक्षम प्राधिकारी "समस्त संगत कारकों" का विश्लेषण करने के बारे में अनुच्छेद 4.2(क) की अपेक्षा को पूरा नहीं कर रहे हैं और इसके अलावा घरेलू उद्योग की स्थिति का पूर्णरूपेण आकलन नहीं होता है। उदाहरणार्थ, ऐसे किसी उद्योग की स्थिति, जिसका उत्पादन एक वर्ष में काफी कम हो जाता है, परंतु उसके बाद उसमें लगातार सुधार होता है, यद्यपि कुछ स्तर तक यह शुरुआती स्तर से कुछ कम रहता है तो यह स्थिति तर्कसंमत ढंग से ऐसी किसी उद्योग की स्थिति से अलग होगी जिसके उत्पादन में विस्तारित अवधि के दौरान लगातार गिरावट आई है। एक छोर से दूसरे छोर का विश्लेषण दोनों मामलों में एक समान होना चाहिए जबकि वर्ष दर वर्ष परिवर्तनों एवं रुझानों पर विचार करने से पूर्णतः विपरीत निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं।

हमारा मानना है कि विभिन्न क्षति कारकों में जांच अवधि के दौरान परिवर्तनों पर विचार करना इस बात के निर्धारण हेतु अनिवार्य है कि क्या किसी उद्योग को गंभीर क्षति हुई है या गंभीर क्षति होने का आसन्नवर्ती खतरा उत्पन्न हो गया है। मध्यवर्ती रुझानों पर विचार किए बिना एक छोर से दूसरे छोर तक की तुलना से अपेक्षानुसार समस्त संगत कारकों का पूर्ण मूल्यांकन प्रदान करने की संभावना नहीं है।



**अपीलीय निकाय की रिपोर्ट**

नोट 130:

पैनल रिपोर्ट के पैरा 8.166 की पाद टिप्पणी 530 में यह स्वीकार किया है कि वर्तमान काल का उपयोग किया जा रहा है, जिसमें यह उल्लेख है कि "यह प्रतीत होगा कि जांच अवधि का शुरुआती बिन्दु कोई भी हो उसे हाल की निकटतम अवधि से अधिक नहीं होना चाहिए" (जोर दिया गया)। यहां हम पैनल से सहमत नहीं हैं। हमारा मानना है कि संगत जांच अवधि हाल के निकटतम अवधि में समाप्त नहीं होनी चाहिए, अपितु उसे हाल की अवधि होना चाहिए।

58. उपर्युक्त से यह स्पष्ट है कि न तो रक्षोपाय संबंधी करार और न ही डब्ल्यू टी ओ के संगत प्रावधानों में जांच अवधि की विशिष्ट परिभाषा या व्याख्या की व्यवस्था की गई है। अपीलीय निकाय की रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से यह उल्लेख है कि संगत जांच अवधि न केवल बिल्कुल हाल में समाप्त हुई अवधि होनी चाहिए; जांच की अवधि हाल की अवधि होनी चाहिए। अतः आवेदन दायर करने के बाद की अवधि की रक्षोपाय जांच में अनदेखी नहीं की जा सकती है। तथापि, प्राकृतिक न्याय की अपेक्षा को पूरा करने की दृष्टि से यह अनिवार्य है कि जांच की शुरुआत के पश्चात प्राप्त हुई या संग्रहीत सूचना को हितबद्ध पक्षकारों को उपलब्ध कराया जाए। जहां तक घरेलू उद्योग के इस तर्क का संबंध है कि बाद की अवधि से संबंधित सूचना की जांच करने की जरूरत नहीं है, यह नोट किया जाता है कि इस तथ्य पर विचार नहीं करते हुए कि क्या जांच की शुरुआत के पश्चात की अवधि की सूचना की जांच करना अनिवार्य है अथवा नहीं, ऐसी सूचना की उपलब्धता से घरेलू उद्योग की अद्यतन स्थिति का पता लगाने में निश्चित रूप से मदद मिलती है।

59. तथापि, वर्तमान मामले में घरेलू उद्योग ने आवेदन में दी गई अवधि से इतर अवधि की सूचना पर भरोसा नहीं किया है, अतः जांच की अवधि को 2008-09 (दिसंबर तक) की अवधि तक सीमित रखा गया है।

60. **संवर्धित आयात** : निम्नांकित तालिका विचाराधीन उत्पाद के आयातों को दर्शाती है। औसत मासिक आयातों में 2006-07 की तुलना में 2007-08 में 495 मी.ट. की वृद्धि हुई है। यह वृद्धि 2008-09 में जारी रही है और वर्ष 2008-09 (दिसंबर तक) के दौरान आयात में 82 मी.ट. प्रति माह तक की वृद्धि हुई है। प्रतिशत के रूप में औसत मासिक आयातों में वर्ष 2007-08 के औसत मासिक आयातों की तुलना में अप्रैल-दिसंबर, 2008 के दौरान 5.8% तक की वृद्धि हुई है। अतः आयातों में मात्रात्मक रूप में वृद्धि हुई है।

	2006-07	2007-08	2008-09 (दिसंबर तक)
कुल आयात (मी.ट.)	11077.00	17016.00	13504.00
औसत मासिक आयात (मी.ट.)	923	1418	1500

61. **उत्पादन के संबंध में आयातों का हिस्सा**: निम्नांकित तालिका उत्पादन की दृष्टि से आयातों को दर्शाती है। उत्पादन के संबंध में आयातों का हिस्सा 2006-07 में 0.63% था, जो वर्ष 2007-08 में बढ़कर 0.93% हो गया परंतु 2008-09 में, 2007-08 (दिसंबर तक) की तुलना में मामूली रूप

से 0.04% घट गया। यह भी देखा जाता है कि वर्ष 2006-07 के बाद से आयातों का हिस्सा 1% से कम रहा है।

	2006-07	2007-08	2008-09 (दिसंबर तक)
आयातों का हिस्सा (%)	0.63	0.93	0.89

62. आयातों में वृद्धि की दर : वर्ष 2007-08 में आयातों में 53.63% की दर से वृद्धि हुई। वर्ष 2008-09 (दिसंबर तक) वृद्धि की दर घटकर 5.78% रह गई। इसका अर्थ यह है कि 2008-09 (दिसंबर तक) में आयातों में वृद्धि की दर में 47.85% की गिरावट आई है।

	2006-07	2007-08	2008-09 (दिसंबर तक)
औसत मासिक आयात (मी.ट.))	923	1418	1500
आयातों में वृद्धि की दर		53.63%	5.78%

63. आयातों द्वारा लिया गया घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा: जैसा कि निम्नांकित तालिका से स्पष्ट है, घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में 2007-08 में 0.30% की कमी आई थी परंतु 2008-09 (अप्रैल-दिसंबर) में इसमें 0.03% का सुधार हुआ। यह देखा जाता है कि घरेलू उद्योग ने 2008-09 (दिसंबर तक) की सूचना के आधार पर गंभीर क्षति के खतरे का दावा किया है। इस प्रकार 2007-08 के आंकड़ों के साथ 2008-09 (दिसंबर तक) के आंकड़ों की तुलना संगत है।

	2006-07	2007-08	2008-09 (दिसंबर तक)
घरेलू उद्योग का हिस्सा (%)	99.37	99.07	99.10

इस प्रकार, बढ़े हुए आयातों के बावजूद घरेलू उद्योग के हिस्से में मामूली वृद्धि हुई है।

64. उत्पादन: वर्ष 2008-09 (अप्रैल-दिसंबर) के दौरान औसत मासिक उत्पादन में 2007-08 की तुलना में 10% की वृद्धि हुई। 2006-07 की तुलना में उत्पादन में 2007-08 में 3.78% की वृद्धि हुई। इस प्रकार 2006-07 के बाद से उत्पादन में लगातार वृद्धि होती रही है। 2008-09 (दिसंबर तक) के दौरान उत्पादन में वृद्धि की दर, यदि उसकी पूर्ववर्ती वर्षों के साथ तुलना की जाए तो 2007-08 में वृद्धि की दर (3.78%) से अधिक है।

	2006-07	2007-08	2008-09 (दिसंबर तक)
कुल उत्पादन (मी.ट.)	1,744,500.00	1,810,292.00	1,499,725.00
औसत मासिक उत्पादन (मी.ट.)	145375	150857.67	166636.11

65. बिक्रियां: वर्ष 2008-09 (अप्रैल-दिसंबर) के दौरान, 2007-08 की तुलना में औसत मासिक बिक्रियों में 9.33% की वृद्धि हुई है। वर्ष 2007-08 में बिक्रियों में वृद्धि 3.5% रही थी। इस प्रकार घरेलू उद्योग की बिक्रियों में निरंतर वृद्धि होती रही है। बिक्रियों में वृद्धि की दर में 2007-08 की तुलना में 2008-09 (दिसंबर तक) में भी 9.33% का सुधार हुआ है।

	2006-07	2007-08	2008-09 (दिसंबर तक)
कुल बिक्री (मी.ट.)	1,744,914.00	1,806,161.00	1,480,967.00
औसत मासिक बिक्री (मी.ट.)	145409.5	150513.42	164551.89

66. **क्षमता उपयोग:** घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग वर्ष 2006-07 में 98% से घटकर 2007-08 में 92% रह गया था। परंतु 2008-09 (दिसंबर तक) में इसमें 104% तक की वृद्धि हुई थी। इसका यह अर्थ होता है घरेलू उद्योग विनिर्माण संयंत्र के सर्वोत्तम संभव उपयोग को प्राप्त करने में सक्षम रहा है।

	2006-07	2007-08	2008-09 (दिसंबर तक)
क्षमता उपयोग	98	92	104

67. **लाभप्रदत्ता :** वर्ष 2007-08 की तुलना में 2008-09 के दौरान लाभप्रदत्ता 20% तक घटकर 4257.76 पीएमटी रह गई है। लगाई गई पूंजी पर आय में 2007-08 की तुलना में 2008-09 में 6.93% से 2.06% तक की गिरावट आई है।

वर्ष	2006-07	2007-08	2008-09 (दिसंबर तक)
कुल लाभ (रु./मी.ट.)	4663.06	5392.35	4257.76
लगाई गई पूंजी पर आय % (ईबीआईटी/नियोजित पूंजी)	8.53	8.99	6.93

68. **उद्योग की समग्र स्थिति का मूल्यांकन :** यह देखा गया है कि वर्ष 2008-09 (दिसंबर तक) के दौरान आयातों में समग्र रूप से 5.8% की वृद्धि हुई है। लेकिन उसी अवधि के दौरान उत्पादन की तुलना में आयातों के हिस्से में 0.04% की गिरावट आई है। घरेलू बाजार में आयातों के हिस्से में भी 0.03% की कमी आई है। घरेलू बाजार में आयातों का हिस्सा हमेशा 1% से कम रहा है। उन्नत बिक्रियों और उन्नत उत्पादन के कारण घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में भी सुधार हुआ है। इसका अर्थ यह है कि घरेलू बाजार बढ़ रहा है और घरेलू उद्योग बढ़े हुए बाजार के आकार में अपना हिस्सा बनाए रखने में सक्षम है। घरेलू उद्योग के पास घरेलू बाजार में 99% से अधिक हिस्सा है और इसमें सुधार की प्रवृत्ति प्रदर्शित हो रही है।

69. **क्षमता उपयोग भी 100% (104%) से अधिक पाया गया है।** इसका अर्थ यह है कि घरेलू उद्योग क्षमता उपयोग की दृष्टि से साधारण प्रत्याशा से बेहतर कार्य निष्पादन करने में सक्षम है। इसका अर्थ यह भी है कि घरेलू उद्योग अपनी स्थापित क्षमता के साथ घरेलू बाजार में संपूर्ण मांग को पूरा करने में सक्षम नहीं है। चूंकि घरेलू उद्योग, घरेलू मांग को पूरा नहीं कर पा रहा है, इसलिए आयात होना एक स्वाभाविक परिणाम है।

70. घरेलू उद्योग की बिक्रियों और उत्पादन में लगातार वृद्धि हो रही है। 2008-09 (दिसंबर तक) के दौरान बिक्रियों और उत्पादन में वृद्धि की दर में 2007-08 की तुलना में सुधार हुआ है। चूंकि वर्ष 2008-09 में उत्पादन 100% क्षमता उपयोग के स्तर से अधिक रहा है, इसलिए साधारणतः इससे बेहतर उत्पादन की उम्मीद नहीं की जा सकती है। घरेलू उद्योग की बिक्रियों में वृद्धि हुई है। वस्तुतः घरेलू उद्योग बढ़े हुए बाजार में भी आयातों के हिस्से को प्राप्त करने में सक्षम रहा है।

71. वर्ष 2008-09 (दिसंबर तक) के दौरान लाभप्रदता में बढ़े हुए उत्पादन, बढ़ी हुई बिक्रियों और 100% से अधिक क्षमता उपयोग के बावजूद 20% तक की गिरावट आई है। घरेलू उद्योग ने भारत में कार्पोरेट फार्मिंग से संबंधित सरकार की नीति में कतिपय अंतरनिहित समस्याओं का उल्लेख किया है जो भारत में कच्ची सामग्री को महंगा बना देती है। उन्होंने पर्यावरण संबंधित मानकों को पूरा करने में आने वाली लागतों का भी उल्लेख किया है। इन कारकों से भारत में उत्पादन लागत बढ़ जाता है। यह सही हो सकता है कि घरेलू उद्योग को ऐसी कतिपय चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिनका सामना शायद निर्यातक देशों में स्थित उनके प्रतिस्पर्धी नहीं कर रहे हों। तथापि, ये सभी कारक सरकारी नीतियों से संबंधित हैं जो घरेलू उद्योग द्वारा संभावित पुनर्गठन के दायरे से बाहर हैं। ये कारक पूर्ववर्ती अवधि में भी मौजूद थे। इन कारकों के कारण कीमत में अंतर हो सकता है, जिसके चलते आयातों में वृद्धि हुई है। तथापि, आवेदकों द्वारा प्रदत्त आंकड़े मात्रात्मक दृष्टि से आयातों में वृद्धि दर्शाते हैं परंतु आयातों में वृद्धि की दर में गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित होती है। आयातों का बाजार हिस्सा कम हो रहा है और यह 1% से कम के स्तर पर बना हुआ है। औसत घरेलू कीमत में वर्ष 2007-08 के दौरान 33,383 के मुकाबले 2008-09 (दिसंबर तक) के दौरान 38,201 तक की वृद्धि हुई है, जिसका अर्थ यह है कि घरेलू उद्योग कीमत बढ़ाने में सक्षम है। अतः घरेलू उद्योग द्वारा बताए गए कारण सुदूर संभावनाएं हैं और नियोजित पूंजी पर आय में कमी, जो केवल 2.6% है, से घरेलू उद्योग को समग्र क्षति नहीं हो सकती है।

72. घरेलू उद्योग बढ़ी हुई बिक्रियों और बढ़े हुए उत्पादन के माध्यम से अपने बाजार हिस्से को बनाए रखने और उसमें सुधार करने में सक्षम रहा है। वर्ष 2007-08 में सुधार के बाद 2008-09 में लाभप्रदता और नियोजित पूंजी पर आय में कमी हुई है। लाभप्रदता में यह वृद्धि और कमी व्यापार चक्र का एक हिस्सा है और इसे घरेलू उद्योग का समग्र नुकसान नहीं कहा जा सकता है। लाभप्रदता में इस गिरावट से गंभीर क्षति के स्पष्ट और आसन्नवर्ती खतरे की मौजूदगी भी सिद्ध नहीं होती है जबकि सभी अन्य मापदंड उद्योग के सुधार की ओर संकेत कर रहे हैं। अतः गंभीर क्षति नहीं हुई है या गंभीर क्षति का कोई खतरा नहीं है।

73. **कारणात्मक संबंध :** आयातों में समग्र रूप से वृद्धि घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से को भी कम नहीं कर सकी है। इसके अलावा, समग्र मात्रात्मक रूप में वृद्धि के बावजूद भी आयात सदैव 1% से कम के स्तर के रहे हैं। 100% से अधिक क्षमता उपयोग से भी यह संकेत मिलता है कि आयातों में वृद्धि घरेलू मांग को पूरा करने के लिए हुई है। आयातों में वृद्धि के साथ बिक्रियों, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बाजार हिस्से में भी वृद्धि हुई है। अतः आयातों में वृद्धि से बिक्रियों, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बाजार हिस्से पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा है। वर्ष 2006-07 से वर्ष 2008-09 के दौरान लाभप्रदता में गिरावट की प्रवृत्ति और आयातों में हुई वृद्धि एक ही समय पर नहीं हुई हैं क्योंकि 2007-08 में लाभप्रदता में उस समय वृद्धि हुई थी, जब आयातों में तेजी से वृद्धि जानकारी में आई थी। अतः आयातों में वृद्धि और लाभप्रदता में गिरावट के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है।

74. चूंकि कोई गंभीर क्षति नहीं हुई है, या गंभीर क्षति का खतरा नहीं है, इसलिए बड़े हुए आयातों और गंभीर क्षति के बीच कारणात्मक संबंध की कोई संभावना नहीं है।

### **निष्कर्ष और सिफारिश:**

75. उपर्युक्त के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुंचा जाता है कि कोई गंभीर क्षति नहीं हुई है या गंभीर क्षति का खतरा नहीं है।

76. तदनुसार अनकोटेड पेपर और कॉपी पेपर के आयातों पर रक्षोपाय शुल्क लगाने की सिफारिश नहीं की जाती है।

[फा. सं. डी-22011/27/2009]

प्रवीण महाजन, महानिदेशक

### **DIRECTOR GENERAL (SAFEGUARDS)**

#### **NOTIFICATION**

New Delhi, the 5th November, 2009

**Sub. : Safeguard investigation concerning imports of Uncoated Paper and Copy Paper—Final findings.**

**G.S.R. 799(E).—**having regard to the Customs Tariff Act, 1975 and the Customs Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty) Rules, 1997 thereof.

#### **A. PROCEDURE**

An application was filed before me under Rule 5 of the Customs Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty) Rules, 1997 by Indian Paper Manufacturers Association, PHD House, (4th floor), 4/2 Siri Institutional Area (Opp. Asian Games Village), New Delhi-110 016 on behalf of (1) ITC Limited -Paperboards- and Specialty Papers Division, 106, Sardar Patel Road, Secunderabad – 500003, Andhra Pradesh, (2) Ballarpur Industries Limited, First India Place, Tower C, Mehrauli Gurgaon Road, Gurgaon (Haryana) – 122001, (3) JK Paper Limited, Nehru House, 4 Bafadur Shah Zafar Marg, New Delhi-110 002, (4) M/s The Andhra Paper Mills Ltd, 501-509, Swapanlok Complex, 92/93, Sarojinidevi Road, Secunderabad-500 003, (5) M/s Tamil Nadu Newsprint and Papers Limited, 67, Mount Road, Guindy, Chennai-600 032, (6) Abhishek Industries Ltd., (7) Century Pulp & Paper, (8) Emami Paper Mills Ltd., (9) Hindustan Paper Corporation Ltd. (10) Khanna Paper Mills Ltd., (11) The Mysore Paper Mills Ltd. (12) Orient Paper & Industries Ltd., (13) Pudumjee Pulp & Paper Mills Ltd., (14) Rama Newsprint and Papers Ltd., (15) Seshasayee paper and paper Board Ltd. (16) The Sirpur Paper Mills Ltd., (17) Star Paper Mills Ltd., (18) The West Coast Paper Mills Ltd. and (19) Yash Paper Mills Ltd. for imposition of Safeguard Duty on increased imports of Uncoated Paper and copy Paper made primarily from virgin chemical pulp into India to protect the domestic producers of Uncoated Paper and copy Paper against serious injury and continued threat of serious injury. Having satisfied that the requirements of Rule 5 were met, the Notice of Initiation of Safeguard investigation concerning imports of Uncoated Paper & Copy Paper (here in after called the “said products”) into India was issued on 20th April, 2009 and was published in the Gazette of India Extraordinary on the same day.

- 2 A copy of the notice was sent to the governments of all the exporting nations through their embassies in New Delhi. A copy of initiation notice was also sent to all known interested parties listed below:

**Domestic Producers Association**

- I. Indian Paper Manufacturers Association  
PHD House, (4<sup>th</sup> floor),  
4/2 Siri Institutional Area,  
(Opp. Asian Games Village),  
New Delhi-110 016

**Domestic Producers**

- I. Ballarpur Industries Limited.  
First India Place, Tower C,  
Mehrauli Gurgaon Road,  
Gurgaon (Haryana) - 122001
- II. JK Paper Limited  
Nehru House, 4 Bafadur Shah Zafar Marg,  
New Delhi-110 002
- III. ITC Limited  
106, Sardar Patel Road,  
Secunderabad – 500003,  
Andhra Pradesh.
- IV. M/s The Andhra Paper Mills Ltd.  
501-509, Swapanlok Complex,  
92/93, Sarojinidevi Road,  
Secunderabad-500 003
- V. M/s Tamil Nadu Newsprint and Papers Limited  
67, Mount Road,  
Guindy,  
Chennai-600 032
- VI. Abhishek Industries Ltd.,  
E 212, Kitchlu Nagar,  
Ludhiana – 141 001,  
Punjab.
- VII. Century Pulp & Paper,  
Century Pulp & Paper  
Ghanshyamdham, P.O. Lalkua – 262 402.  
Distt. Nainital, Uttaranchal

- VIII. Emami Paper Mills Ltd.,  
Emami Paper Mills Ltd.  
687 Anandapur e.m. bypass,  
Kolkata – 700 107.
- IX. Hindustan Paper Corporation Ltd.  
75-C, Park Street,  
Kolkata – 700 016.
- X. Khanna Paper Mills Ltd.,  
Fatehgarh Road,  
Amritsar – 143 001.
- XI. The Mysore Paper Mills Ltd.  
16/4 Ali Asker Road,  
P.B. No. 112,  
Bangalore – 560 052.
- XII. Orient Paper & Industries Ltd.,  
Birla Building  
9/1, R.N. Mukherjee Road,  
Kolkata – 700 001.
- XIII. Pudumjee Pulp & Paper Mills Ltd.,  
Jatia Chambers,  
60, Dr. V.B. Gandhi Marg,  
Mumbai – 400 023.
- XIV. Rama Newsprint and Papers Ltd.,  
31, Chowringhee Road,  
Kolkata – 700 016.
- XV. Seshasayee paper and paper Board Ltd.  
Cauvery R S P O  
Erode – 638 007.  
Tamil Nadu
- XVI. The Sirpur Paper Mills Ltd.,  
UCO Bank Building (3rd Floor)  
Parliament Street,  
New Delhi – 110 001.
- XVII. Star Paper Mills Ltd.,  
Seth Baldeodas Bajoria Road,  
Saharanpur,  
Uttar Pradesh – 247 001.

XVIII. The west Coast Paper Mills Ltd.  
31, Chowringhee Road,  
Kolkata – 700 016.

XIX. Yash Paper Mills Ltd  
P.O. Darshannagar,  
Distt. Faizabad – 224 135  
Uttar Pradesh.

#### Importers and Users

- I Chimanlal Fein Paper Pvt. Ltd:  
40/42, Bombay Mutual Building  
293, Dr. D.N. Road Mumbai
- II Infinity Industries Pvt. Ltd:  
Haroon House, 1st Floor,  
294, Parin Nariman Street,  
Opp RBI Mumbai
- III Paper Plus Technologies (P) Ltd:  
  
Sn. 592/2/11, Handewali Road,  
Bhosala Farm, Devachi Urali,  
Pune
- IV Akshay Impex:  
7, Nyniappa Naicken Street,  
Second Floor,  
Chennai – 600003, Tamil Nadu
- V Amit Impex: New no. 17,  
Old no.9, Narayana Mudali Lane,  
Chennai – 600079
- VI Papers World Wide (India) services Private Limited:  
18, Sadullah Street, Flat A,  
Prabhu Apartments,  
T. Nagar, Chennai,  
Tamil Nadu - 600017
- VII Ajanta Offset and Packaging Limited:  
Plot no. 61, sector 27- C,  
Faridabad,  
Haryana – 121003



- VIII Aero Exports:  
Plot no. 183, Sector IV,  
Manesar, Gurgaon, Haryana,  
F-80, Khanpur Extension,  
Delhi.
- IX Repro India Limited:  
A-50/2, TTC Industrial Area,  
MIDC Mahapa,  
New Bombay – 400709
- X Printhouse (India) Pvt. Ltd  
6, Datta Mandir Road  
Bhandup (West), Mumbai

#### Exporters & Foreign Producers

- I. APRIL fine paper trading,  
Jalan Teluk betung No. 31,  
Jakarta,  
Indonesia
- II. Advance Agro,  
187/3 Moo 1, Bangna-Trad km.42 Road,  
Bangwua District,  
Amphur Bangpakong,  
Chachoengsao, 24180  
Thailand
- III. Stora Enso Oyj P.O. Box 309,  
FI-00101 Helsinki,  
Finland
- IV. Sinar Mass Group –APP China  
Sinar –Mass Paper (China) Investment Co., Ltd.  
8-9F, Bund Centre, No. 222,  
East Yan'an Road,  
Shanghai, 2000002
- V. Gold East Trading (HONGKONG) Co Ltd,  
Unit 501-504A,  
Empire Centre  
68 Mody Road, T SimshaTsui East  
Hongkong

403862/09-4

- VI. Kowa Company Ltd,  
6-29 Nishiki 3- Chome Naka-Ku Nagoya,  
Japan
- VII. Vital Solutions pte Ltd,  
Singapore 069532
- VIII. Daiei Paper (S.A.) Pte Ltd,  
3. Shenton way, # 11-08,  
Shenton House  
Singapore
- IX. Cellmark asia Pte Ltd,  
47 Scotts road  
# 12-01 Goldbell Towers,  
Singapore
- X. International Paper,  
6400 Poplar Avenue,  
Memphis 38197,  
USA.
- XI. West Waco,  
11013 West Broad street,  
Glen Allen,  
Virginia 23060,  
USA.
- XII. M-real corporation,  
PO Box 20,  
Metsa 02020,  
Finland.

- 3 Questionnaires were also sent, on the same day, to all known domestic producers and importers and exporters asking them to submit their response within 30 days.
- 4 All requests for consideration of interested parties and extension of the time period were considered and these requests were accepted considering the expediency of investigation.

- 5 The applicant had requested for provisional safeguard duty and provided evidences of critical circumstances in case of Uncoated Paper and Copy Paper and thus preliminary findings were considered in the case of these products. The need to impose immediate safeguard measures was examined as per the Rule 9 of Customs Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty) Rules, 1997 issued vide Notification No 35/97-NT-Customs dated 29.07.1997 which prescribes that the Director General shall proceed expeditiously with the conduct of the investigation and in critical circumstances, he may record a preliminary finding regarding serious injury or threat of serious injury. On the basis of the above, preliminary finding was issued on 24<sup>th</sup> April 2009 recommending safeguard duty at the rate of 20% ad valorem on Uncoated Paper and Copy Paper when imported into India. However, no provisional safeguard duty was imposed.
- 6 A public hearing was held on 15<sup>th</sup> September 2009, notice for which was sent on 17<sup>th</sup> August, 2009. All interested parties who participated in the public hearing were requested to file a written submission of the views presented orally in terms of sub rule (6) of rule 6 of the Custom Tariff (Identification and Assessment of Safeguard Duty) Rules, 1997. Copy of written submission filed by one interested party was made available to all the other interested parties. Interested parties were also given an opportunity to file rejoinder, if any, to the written submissions of other interested parties. All the views expressed by the interested parties either in the written submissions or in the rejoinders were examined and have been taken into account in making appropriate determination.
- 7 The information presented by domestic producers were verified by on-site visits to the plants of the domestic producers to the extent considered necessary. The non confidential version of verification report is kept in the public file.

#### **Views of the Domestic Industry**

- 8 The application has been filed by Indian Paper Manufacturers Association, on behalf of (1) ITC Limited (2) Ballarpur Industries Limited, (3) JK Paper Limited, (4) M/s The Andhra Paper Mills Ltd, (5) M/s Tamil Nadu Newsprint and Papers Limited, (6) Abhishek Industries Ltd., (7) Century Pulp & Paper, (8) Emami Paper Mills Ltd., (9) Hindustan Paper Corporation Ltd. (10) Khanna Paper Mills Ltd., (11) The Mysore Paper Mills Ltd. (12) Orient Paper & Industries Ltd., (13) Pudumjee Pulp & Paper Mills Ltd., (14) Rama Newsprint and Papers Ltd., (15) Seshasayee paper and paper Board Ltd. (16) The Sirpur Paper Mills Ltd., (17) Star Paper Mills Ltd., (18) The west Coast Paper Mills Ltd. and (19) Yash Paper Mills Ltd for imposition of Safeguard Duty on imports of Uncoated paper and copy paper, made primarily from virgin chemical pulp, into India; against threat of serious injury caused by the increased imports. The applicants have made following major points:-

- 9 The applicants have alleged that the trend of increased imports of Uncoated paper and copy paper into India have caused a threat of serious injury to domestic industry.
- 10 The domestic industries manufacture Uncoated paper and copy paper made primarily from virgin chemical pulp falling under various headings of chapter heading 4802. The domestic industry has submitted that their products are directly competing products with imported products falling under 4802 54 90, 4802 55 10, 4802 55 20, 4802 55 30, 4802 5540, 4802 55 50, 4802 55 90, 4802 5610, 4802 5620, 4802 5630, 4802 5640, 4802 56 50, 4802 5690, 4802 57 10, 4802 57 20, 4802 57 30, 4802 5740, 4802 57 50, 4802 5790, 4802 58 10, 4802 58 20, 4802 58 30, 4802 58 40, and 4802 58 90 of HSN as well as Customs Tariff Act, 1975. The applicants have alleged threat of serious injury caused to the domestic producers by the increased imports of Uncoated paper and copy paper made primarily from virgin chemical pulp into India falling under above headings under eight digit level.
- 11 Papers are made using pulp obtained by chemical or mechanical process or a combination of both. Further, the pulp can be obtained either by using fresh plant sources or from recycled paper. The present application covers, Uncoated Paper and copy Paper, primarily made with virgin pulp, using chemical process. The domestic industry has argued that the products falling under the headings mentioned above, at eight digit level, are similar as far as their technical characteristics, chemical composition and other basic features are concerned. The products of all these headings find similar uses. Therefore these products are like and directly competitive products. Despite possible minor superficial differences, in terms of quality, these products have the similar basic physical characteristics and similar end uses. These are sold via similar or identical sales channel. These products compete mainly on price. Imposition of safeguard duty on one heading at eight digit level in isolation will not serve any purpose since the importers will start importing other directly competing products. Thus, the domestic industry has argued, in view of above, for the purposes of safeguard investigation, the product basket, consisting of products mentioned above, needs to be considered as the 'product under consideration'.
- 12 They have alleged that surge in imports are taking place at lower prices making them lose their market share.
- 13 The increased imports at lower prices are on account of unforeseen developments. Fall in demand in exporting countries has forced manufacturers in those countries to get rid of their surplus inventories through excessive discounts of export which is the cause for sudden increase in imports. The major players have very small domestic demand compared to their respective production capacities. The Far East paper producers have created huge capacity of uncoated paper and copy paper. Out of this capacity, major portion was meant for developed countries. On account of sudden

decline in demand in the developed countries, the importers of developed countries stopped buying paper from these countries which resulted into huge stock built up with the companies of Exporting Countries. Resultantly, these units are left with piled stock of uncoated paper and copy paper, which they are trying to export at lower prices to India, which is still growing at a fair rate of growth. This product is being sent into Indian market to release the working capital, which is causing threat of serious injury to domestic industry.

- 14 The Profitability and return on capital employed of domestic industry has gone down. The difference in landed price of imports and domestic selling price has gone up during the period of investigation and has caused threat of serious injury.
- 15 They have requested for imposition of Safeguard duty to protect the domestic producers of uncoated paper and copy paper against serious injury in view of current threat of serious injury caused by the increased imports.
- 16 They have alleged that unforeseen developments are causing increased imports and that this increase has caused threat of serious injury. There is no other factor which has perceptible bearing on the threat of serious injury faced by the domestic producer.
- 17 The applicants submit that the imposition of safeguard duty on uncoated paper and copy paper shall not cause harm to public, as prices of domestic uncoated paper and copy paper are more or less stable in India. Further, the applicants have submitted that apart from direct employment to their employees, the paper industry, provides support to farmers in earning their livelihood and are instrumental in soil conservation. Therefore imposition of safeguard duty for protecting paper industry will be actually in public interest.
- 18 Market share of domestic industry was 99.4% in 2006-07, which declined to 99.1% during 2007-08. In the first nine months of 2008-09, market share of domestic industry was stagnant at the same level. This has further declined to 98.7% in Jan-march 2009, whereas there is a growth in imports in absolute terms as well as relative terms. However, import prices of these items have fallen sharply leading to threat of increased imports, and, consequent threat of serious injury.
- 19 In the recent period of nine months, there is abnormal increase in unsold inventory lying in the factory of the applicants. The inventory has increased to 104750 MT as on 31.12.2008 in comparison to 66808 MT as on 30.6.2008.
- 20 Capacity utilization has gone down to 90% in Apr-Jun, 2009 from 104% in Apr-Dec, 2008.

- 21 The increase in imports has had injurious effects in terms of pressure on prices and a reduction in share of the domestic industry in sales and their profitability. Thus causal link between surge in imports and threat of serious injury to domestic industry is established.
- 22 Unprecedented uneven recession in various countries has led to sudden increase of imports into India, which has a better growth compared to other countries. There are surplus capacities of exporters in developed countries whereas demand of uncoated paper and copy paper in developed countries has fallen down. The growth in demand is the highest in India. This is causing diversion of uncoated paper and copy paper to Indian market at cheaper prices posing a threat of serious injury.
- 23 The present capacities of domestic producers which are being utilized to the extent of 90%, are capable of taking care of present domestic demand. Further, capacity expansions are planned to take care of future growth in the demand of the product. The domestic industry is committed towards use of better manufacturing practices, increase in house power generation, reduction in administrative expenses and effective inventory management.

#### **Views of Governments of the exporting nations**

- 24 Imports did not even reach the level of 1% of the market share in India in the last few years, thus the domestic industry held almost, the whole of the market for Uncoated Paper and Copy Paper.
- 25 There is absence of increased imports within the meaning of the WTO Safeguard Agreement. There is no increase in imports which is recent enough, sudden enough, sharp enough and significant enough.
- 26 The injury analysis carried out is totally unsatisfactory. Relevant injury indicators like data showing the development of sales, production, productivity, capacity utilization, profit and employment are not included in the analysis. Market share remained stable and exceptionally high (around 99%), production and sales increased, capacity utilization was very high and even reached 104% during the period April-December 2008. Profit level however, is unclear. It cannot thus be concluded that the situation of the domestic industry was impaired.
- 27 No causal link is established. Even if the domestic industry would have suffered from any injury, this would have been caused by factors other than imports.
- 28 According to Article 6 of the WTO SG, provisional measures may be taken in critical circumstances pursuant to a preliminary determination that there is clear

evidence that increased imports have caused or are threatening to cause serious injury. In this case, no clear evidence has been provided of injury and causal link.

- 29 Indian domestic producers have succeeded in increasing their domestic sales volumes from 1806161 MT in the period from April 2007 to March 2008 to 1974623 MT in the period from April 2008 to March 2009. This implies an increase in domestic sales to the tune of 9%. The domestic production also increased from 1810292 MT to 1999633 MT i.e. an increase of approximately 10% during the same period.

#### **Views of the Exporters**

- 30 There has been no increase in imports during the period of investigation which could be considered as a "surge" in imports. The monthly imports have gone up by a meager 82 MT in a market which is supposed to be of the magnitude of about 125000 MT per month as per estimates of the applicants themselves. The increase constitutes a miniscule 0.06% of the Indian demand and cannot be the basis for safeguard action which is meant only to address unforeseen and critical circumstances.
- 31 Unsubstantiated statements like economic meltdown and recession, idling of production capacities in exporting countries and resorting to export of the product in increased quantities at low prices by these countries to Indian market, have been made by the applicants in support of unforeseen developments. These statements are nothing but conjectures and surmises. There is no data, information or analysis to support any of the above inferences.
- 32 There is no decline in sales and market share. The market share of the domestic industry has increased from 99.07% in 2007-08 to 99.10% and decreased by a negligible 0.20% in January-March 2009. There is no basis to allege serious injury on account of a negligible increase of 0.20% in the market share.
- 33 There is no decline in the import prices. In fact the uncoated paper prices during the period of investigation have gone up as compared to the year 2007-08. The prices were Rs 35822/- per MT in 2007-08 whereas in Oct 08, Nov 08 & Dec 08, Jan 09, these were Rs 38055/- per MT, Rs 38653/- per MT, Rs 38843/- per MT & Rs 39270/- per MT respectively. The domestic industry has given misleading data of non-comparable periods which have been accepted by the DG without any in-depth analysis.
- 34 There has been no decline in the profitability of the domestic industry. The quarterly results of the three constituents of the domestic industry namely BILT, JK Papers & ITC Ltd show that the claims regarding fall in profitability are false and misleading. These three units have shown increase in profits by 2.63%, 16.55% & 8% respectively, if the results of nine months ending 31 Dec 2007 are compared with nine months ending 31 Dec 2008.

- 35 There is no analysis of capacity or capacity utilization of the domestic industry. In fact, domestic industry did not have the capacity to cater to the burgeoning demand in the country resulting in the increase in the market share of imports, marginally.
- 36 The total increase in imports from 2007-08 to 2008-09 is a mere 2753 for the entire year, which amounts to 229 MT per month. If it is compared with the total domestic consumption for the period 2008-09, it would amount to a meager 0.11%. This amount is certainly negligible, in absolute, as well as relative terms.
- 37 It must be noted that the total imports during the period 2008-09 were around 19000 MT which was a mere 2000 MT more than the imports during 2007-08. However, it needs to be noted that the inventories lying unsold as per domestic industry is in the range of 66808 to 104750 MT between June 2008 and December 2008. It is evident that the negligible increase in imports is not a factor for the increased inventories. The stock accumulation of the domestic industry is not due to surge in imports but due to some undisclosed inherent problems and cannot be attributed to the alleged surge in imports.
- 38 The domestic industry has made very general remarks about improvements in manufacturing and management practices, with regard to the restructuring plan. These cannot be treated as a viable restructuring plan by any stretch of imagination, under the rigorous requirements of the Agreement on Safeguards and the Indian laws.

**Views of the end users and importers**

- 39 The application did not contain a proper definition of the product under consideration. The description given is general and does not differentiate in any way between uncoated paper and copy paper. Uncoated paper and copy paper which are two distinct product groups. Each has distinct end uses. Use of copy paper is generally limited to use in offices for copying and printing purposes, whereas uncoated paper-which is much larger in size- is generally used for industrial printing purposes(e.g. books, diaries etc.).
- 40 There is no significant increase in imports as is required by Section 8B. The share of imports in total demand of the product has actually fallen to 0.90 % in 2008-09(Apr-Dec) from 0.93% in 2007-08. Further, the market share of imports from all countries combined adds up to less than 1%. Even according to applicants estimates, imports are set to hold a market share of 1.11%. An objective analysis of the data on record cannot lead to the conclusion that a serious injury has been caused or is threatened to be caused, by increase in imports.
- 41 Production and sales figures of the domestic industry. have been steadily improving over the last three years. Production has increased to 1999633 MT in 2008-09 from 1744500 MT in 2006-07(an increase of 15%) and sales have increased to 1974623 MT in 2008-09 from 1744914 MT in 2006-07 depicting an increase of 13%. Therefore, there is no serious injury to the domestic industry.
- 42 Financial data available in the public domain belies the domestic industry's claims of financial harm. As per the Bloomberg press release from July 3,2009, Ballarpur Industries Ltd plans to invest about \$ 1 billion in overseas acquisitions



- and is expanding plants at home to quadruple capacity in five years. Further, shares of Ballarpur have gained by 18% since resuming trading after a March 31 stock split. During the same time, the benchmark Bombay Stock Exchange declined by 16.3%. BILT improved its ROCE from 8.1% to 8.3% between 2006 and 2007. In fact, Ballarpur's 5 year average profitability ratios far exceeded those of other players in the industry. Similarly, J K Paper Ltd doubled its net profit for the quarter ending June 2009 to 20.2 crores, while ITC Ltd saw a 26% rise in revenues from the paper business in, the fourth quarter of 2008-09.
- 43 According to the data provided in the petition, including the petitioner's own estimates for 2008-09, the petitioners' total domestic production increased by 8% between 2006-07 and 2007-08, and by a further 18.8% between 2008-09 and 2007-08. When compared with the figures of 2006-07, total domestic production during 2008-09 increased by more than 28%.
- 44 Petitioner bases its claim of a threat of serious injury largely on "the recent global financial crisis". Notwithstanding the fact that the petitioner has provided no evidence to substantiate its claim (e.g. huge inventory pile up in China and Indonesia, etc), all indications are that the global recession has or is just about to come to an end.
- 45 The domestic industry has managed to maintain a sales-as-a-percentage-of-production level of nearly 100% for the last 3 years. Therefore, the petitioner's loss in the market share during this time cannot be the result of increased imports. Instead, the only explanation for this is the domestic industry's own inability to keep up with the growth in domestic demand.
- 46 While the petitioner points out the recent decline in import prices of uncoated paper and copy paper into India, Petition conveniently fails to discuss the reasons why such import prices have fallen. The fact is that import prices of the subject product have fallen as a direct result of a fall in raw material input prices. The prices of softwood pulp and hardwood pulp in US have fallen from 800 US\$ and 750 US \$ respectively in January 2008 to 500 US\$ and 410 US\$ respectively in May 2009. This shows a percentage drop of 37.5% and 45.3% respectively.
- 47 The imposition of safeguard duty on the subject product is against the public interest as such duties would further increase the cost of production for the Indian book publishing industry, in turn jeopardizing said industry in the face of outsourcing and foreign competition. Paper is major raw material for production of books (more than 50% of cost of books). If safeguard duty is imposed on books it shall result in imposition of tax on books in India which is against public interest.
- 48 Furthermore, the printing Industry provides employment to millions of workers in India. Any increase in the price of paper, let alone the substantial increase which would result from the imposition of safeguard duty, would increase the price of books and consequently affect Govt. of India's literacy drive.
- 49 The data contained in the petitioner's own application indicates that import prices are significantly up for all countries since 2006-07. In fact import prices were up 25.6% for the period April-December 2008 vs FY 2006-07 (page 7 of petitioner's application refers).

- 50 There is no causal link between serious injury and increase in imports. The imports are virtually negligible. The serious injury, if any, is the result of a number of other factors which have nothing to do with the negligible imports of the subject goods. These other factors relate to issues of quality, delivery issues, overseas and domestic losses incurred in units which produce non-subject goods, scarcity of raw materials in the domestic market, high energy costs and low recovery rate for waste paper vis-à-vis foreign uncoated paper and copy paper manufacturers.
- 51 Petitioner's claims regarding its supposed "restructuring plan" are absurd. The said plan contains nothing more than generic statements about plans to increase capacity, and its plan to cut its raw material, energy and other costs.

#### **Findings of D.G.**

- 52 I have carefully gone through the case records and the replies filed by the domestic producers, users/importers, exporters and the exporting governments. Submissions made by the various parties and the issues arising therefrom are dealt with at appropriate places, in the findings below.
- 53 **Product under consideration:** The applicants have alleged that increased imports of Uncoated paper and copy paper into India have caused threat of serious injury to domestic industry. The domestic industries manufacture Uncoated paper and copy paper made primarily from virgin chemical pulp falling under various headings of chapter heading 4802. The domestic industry has submitted that their products are directly competing products with imported products falling under 4802 54 90, 4802 55 10, 4802 55 20, 4802 55 30, 4802 55 40, 4802 55 50, 4802 55 90, 4802 56 10, 4802 56 20, 4802 56 30, 4802 56 40, 4802 56 50, 4802 56 90, 4802 57 10, 4802 57 20, 4802 57 30, 4802 57 40, 4802 57 50, 4802 57 90, 4802 58 10, 4802 58 20, 4802 58 30, 4802 58 40, and 4802 58 90 of HSN as well as Customs Tariff Act, 1975. The applicants have alleged threat of serious injury caused to the domestic producer by the increased imports of Uncoated paper and copy paper made primarily from virgin chemical pulp into India falling under the above headings at eight digit level.
- 54 Papers are made using pulp obtained by chemical or mechanical process or a combination of both. The pulp can be obtained either by using fresh plant sources or from recycled paper. The present application covers Uncoated Paper and copy Paper primarily made with virgin pulp using chemical process. The product under consideration covers a large number of product groups, which are imported, as well as produced in India. There may be minor differences in terms of quality and technical specification but these products have similar technical characteristics, chemical composition and other basic features. These are sold via similar or identical sales channel. These products compete mainly on price. These imported products are substitutable to domestically produced products. Therefore, the imported products are 'similar or directly competitive' articles.

- 55 **Domestic Industry** - The application has been filed by Indian Paper Manufacturers Association (IPMA), on behalf of (1) ITC Limited (2) Ballarpur Industries Limited, (3) JK Paper Limited, (4) M/s The Andhra Paper Mills Ltd, (5) M/s Tamil Nadu Newsprint and Papers Limited, (6) Abhishek Industries Ltd., (7) Century Pulp & Paper, (8) Emami Paper Mills Ltd., (9) Hindustan Paper Corporation Ltd. (10) Khanna Paper Mills Ltd., (11) The Mysore Paper Mills Ltd. (12) Orient Paper & Industries Ltd., (13) Pudumjee Pulp & Paper Mills Ltd., (14) Rama Newsprint and Papers Ltd., (15) Seshasayee paper and paper Board Ltd. (16) The Sirpur Paper Mills Ltd., (17) Star Paper Mills Ltd., (18) The west Coast Paper Mills Ltd. and (19) Yash Paper Mills Ltd for imposition of Safeguard Duty on imports. The members of IPMA constitute more than 80% of the total production in India and they have disclosed their information through IPMA. Accordingly, the member of IPMA constitute domestic industry in terms of clause (b) of subsection (6) of Section 8B of the Customs Tariff Act, 1975.
- 56 **Period of Investigation:** The domestic industry has supplied information up to 2008-09 ( up to December) and claimed threat of serious injury based on comparison of 2008-09 (Up to December) with the information of past years i.e 2007-08 and 2006-07. The preliminary finding was based on 2008-09 (up to December) as period of investigation. The domestic industry has neither relied upon nor submitted any data for the subsequent period on the ground that the period of investigation should not be extended as it would be against the norms of natural justice. They also contended that the subsequent information is not necessary to be considered as the same might have been influenced by the initiation of Safeguard investigation.
- 57 The issue has been examined. The Customs Tariff Act, 1975, the Custom Tariff (Identification and Assessment of Safeguard duty) Rules, 1997, the Agreement on Safeguard or the relevant Article XIX of GATT does not specifically define what the Period of Investigation should be. However, the issue of period of investigation has been dealt extensively in the panel's report on Argentina Footwear as well as Appellate Body Report on Argentina Footwear, which are being produced below;

***"Argentina- safeguard measures on imports of Footwear; Report of the Panel***

8.216 *Regarding the investigation's almost exclusive reliance on end-point-to-end-point comparisons in its analysis of the changes in the situation of the industry, we have the same concerns as were noted above with regard to the "increased imports" analysis. Here we note in particular that if intervening trends are not systematically considered and factored into the analysis, the competent authorities are not fulfilling Article 4.2(a)'s requirement to analyse "all relevant factors", and in addition, the situation of the domestic industry is not ascertained in full. For example, the situation of an industry whose production drops drastically in one year, but then recovers steadily thereafter, although to a level still somewhat below the starting level,*

*arguably would be quite different from the situation of an industry whose production drops continuously over an extended period. An end-point-to-end-point analysis might be quite similar in the two cases, whereas consideration of the year-to-year changes and trends might lead to entirely opposite conclusions.*

*We believe that consideration of changes over the course of the investigation period in the various injury factors is indispensable for determining whether an industry is seriously injured or imminently threatened with serious injury. An end-point-to-end-point comparison, without consideration of intervening trends, is very unlikely to provide a full evaluation of all relevant factors as required*

### **Appellate Body Report**

*Note 130:*

*The Panel, in footnote 530 to para. 8.166 of the Panel Report, recognizes that the present tense is being used, which it states "would seem to indicate that, whatever the starting-point of an investigation period, it has to end no later than the very recent past." (emphasis added) Here, we disagree with the Panel. We believe that the relevant investigation period should not only end in the very recent past, the investigation period should be the recent past.*

- 58 From the above it is apparent that neither the Agreement on Safeguard nor the relevant provisions of WTO provide specific definition or interpretation of the period of investigation. The Appellate Body Report has given the finding in unequivocal terms that the relevant investigation period should not only end in the very recent past; the investigation period should be the recent past. Therefore, the period after filing of the application cannot be ignored in safeguard investigation. However, in order to meet the requirement of natural justice, it is imperative that the information received or collected after initiation of investigation is made accessible to the interested parties. As far as the contention of the domestic industry that it is not necessary to examine the information relating to subsequent period, it is noted that irrespective of the fact whether the examination of information for the period subsequent to initiation of investigation is mandatory or not, the availability of such information certainly helps to have the latest status of domestic industry.
- 59 However, in the instant case, the domestic industry has not relied on information of the period other than referred to in the application. Therefore, the period of investigation is limited to the period 2008-09 (upto December).
- 60 **Increased Imports:** The table below gives the imports of product under consideration. The average monthly import has gone up by 495 MT in 2007-08 compared to 2006-07. The increase continued in 2008-09 and the import increased by 82MT per month during 2008-09 (upto December). In percentage terms the average monthly imports have gone up by 5.8% during April-

December, 2008 compared to the average monthly imports of 2007-08. Therefore, there is an increase in imports in quantitative terms.

	2006-07	2007-08	2008-09 (upto December)
Total Imports (MT)	11077.00	17016.00	13504.00
Average Monthly Imports (MT)	923	1418	1500

- 61 **Share of Imports relative to production:** The table below gives imports relative to their production. The share of imports relative to production was 0.63% in 2006-07, which increased to 0.93% in 2007-08 but reduced slightly in 2008-09 (up to December) by 0.04%, compared to 2007-08. It is also seen that the share of imports remained below 1% since 2006-07.

	2006-07	2007-08	2008-09 (upto December)
Share of Imports (%)	0.63	0.93	0.89

- 62 **Rate of increase of Import:** The import increased at the rate of 53.63% in 2007-08. The rate of increase declined in 2008-09 (Upto December) to 5.78%. It implies that the rate of increase of imports has fallen by 47.85% in 2008-09 (up to December)

	2006-07	2007-08	2008-09 (upto December)
Average Monthly Imports (MT)	923	1418	1500
Rate of increase of imports		53.63%	5.78%

- 63 **Market Share of domestic industry taken by imports:** As is apparent from the table below, the market share of domestic industry declined in 2007-08 by 0.30% but it improved by 0.03% in 2008-09 (April-December). It is seen that the domestic industry has claimed threat of serious injury based on 2008-09 (upto December) information. Thus the comparison of the 2008-09 (upto December) data with 2007-08 data is relevant.

	2006-07	2007-08	2008-09 (upto December)
Share of domestic industry (%)	99.37	99.07	99.10

Hence, the share of domestic industry increased slightly despite the increased import.

- 64 Production:** The average monthly production during 2008-09 (April-December) has gone up by 10% compared to 2007-08. The production had gone up by 3.78% in 2007-08 compared to 2006-07. Thus, there is a continuous increase in production since 2006-07. The rate of increase in production during 2008-09 (up to December)[10%] is more than the rate of increase in 2007-08 [3.78%], when compared to the immediately preceding years.

	2006-07	2007-08	2008-09 (upto December)
Total Production (MT)	1,744,500.00	1,810,292.00	1,499,725.00
Average Monthly Production (MT)	145375	150857.67	166636.11

- 65 Sales:** The average monthly sales during 2008-09 (April-December) have gone up by 9.33% compared to 2007-08. The rise in sales in 2007-08 was 3.5% in 2007-08. Thus, there has been a continuous growth in sales of the domestic industry. The rate of increase of sales also improved to 9.33% in 2008-09 (upto December) compared to 2007-08.

	2006-07	2007-08	2008-09 (upto December)
Total Sales(MT)	1,744,914.00	1,806,161.00	1,480,967.00
Average Monthly Sales (MT)	145409.5	150513.42	164551.89

- 66 Capacity Utilization:** The capacity utilization of domestic industry had gone down to 92% in 2007-08 from 98% in 2006-07, but the same increased to 104% in 2008-09 (up to December). Implying thereby that the domestic industry is able to achieve the best possible utility of the manufacturing plant.

	2006-07	2007-08	2008-09 (upto December)
Capacity Utilization	98	92	104

- 67 Profitability:** The profitability has gone down by 20% to Rs. 4257.76 PMT during 2008-09 compared to 2007-08. The Return on Employed Capital has also gone down by 2.06% to 6.93% in 2008-09 compared to 2007-08.

Year	2006-07	2007-08	2008-09 (up to Dec)
Total profit (Rs/MT)	4663.06	5392.35	4257.76
ROCE % (EBIT/Capital Employed)	8.53	8.99	6.93

- 68 **Evaluation of Overall position of industry:** It is seen that the imports have increased by 5.8% during 2008-09 (upto December) in absolute terms, but the share of imports fell by 0.04% compared to production during the same period. The share of imports in domestic market also fell by 0.03%. The share of imports in domestic market has always been less than 1%. The market share of domestic industry also improved on account of improved sales and improved production. It means that the domestic market is growing and the domestic market is able to keep its share in the increased market size. The domestic industry has more than 99% of share in the domestic market, and is showing an improving trend.
- 69 The capacity utilization is also found to be more than 100% (104%). It implies that the domestic industry is able to perform better than ordinarily expected in terms of capacity utilization. It also implies that the domestic industry is not able to meet the complete demand of domestic industry with its installed capacity. As the domestic industry cannot meet the domestic demand, the import is a natural consequence.
- 70 The sales and production by domestic industry is growing continuously. The rate of growth in sales and production during 2008-09 (up to December) improved compared to 2007-08. As the production in 2008-09 has been at above 100% capacity utilization, no better production can, ordinarily, be expected. The sales by domestic industries have gone up. In fact the domestic industry has been able to take the share of imports also in the increased market.
- 71 The profitability has gone down during 2008-09 (upto December) by 20%, even after increased production, increased sales and above 100% capacity utilization. The domestic industry has cited certain inherent problems in government policy in relation to corporate farming in India, which makes the raw material expensive in India. They have also referred to the expenses incurred in meeting the environment related norms. These factors increase the cost of production in India. It may be correct that the domestic industry has to face certain challenges, which their counterparts in exporting nations may not have to encounter. However, all these factors are relating to the government policies which are beyond the realm of possible restructuring by domestic industry. These factors were in existence in the past too. These factors may cause price difference, which in turn may cause increased import. However, the data provided by the applicant shows increase in import in quantitative terms, but the rate of increase of imports is showing a down ward trend. The market share of import is going down and remains below 1%. The average domestic price has gone up to 38,201 during 2008-09 (up to Dec) against 33,383 during 2007-08, which implies that the domestic industry is able to increase the price. Therefore, the reasons quoted by the domestic industry are remote possibilities and reduction in ROEC, alone, by 2.06% cannot be termed as overall impairment of domestic industry.
- 72 The domestic industry has been able to retain and improve its market share through increased sales and increased production. There is a reduction in profitability and ROEC in 2008-09 after improvement in 2007-08. This gain and

reduction in profitability is part of business cycle and cannot be termed as overall impairment of the domestic industry. Nor can this fall in profitability, prove existence of clear and imminent danger of serious injury, when all the other parameters are showing signs of improvement of industry. Therefore, there is no serious injury or threat of serious injury.

- 73 **Causal Link:** The increase in import in absolute terms has not even been able to reduce the market share of domestic industry. Besides the imports, even after increase in absolute quantitative terms, have always remained below 1%. The capacity utilization of more than 100% also indicates that the increase in import may be on account of meeting the domestic demand. The sales, production, capacity utilization and market share increased along with the increase in imports. Therefore, the increase in imports has no adverse impact on sales, production, capacity utilization and market share. The trend of fall in profitability does not coincide with increased imports during 2006-07 to 2008-09, as profitability increased in 2007-08 when sharper increase in imports was noticed. Therefore, there is no causal link between increased imports and fall in profitability.

- 74 As there is no serious injury or threat of serious injury, there is no possibility of causal link between increased imports and serious injury.

**Conclusion and Recommendation:**

- 75 Based on the above, it is concluded that there is no serious injury or threat of serious injury.
- 76 Accordingly, no safeguard duty on imports of Uncoated Paper & Copy Paper is recommended.

[F. No. D-22011/27/2009]

PRAVEEN MAHAJAN, Director General